Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

قَوَ كَذَّبَ بِهٖ قَوْمُكَ وَهُوَ الْحَقُّ ؕ قُلْ لَّسْتُ عَلَيْكُمْ بِوَكِيْلٍ

(सूरत ईनाम : 67)

अनुवाद : और तेरी क़ौम ने उस को झुठलाया दिया है हालाँकि वही हक़ है। तू कह दे कि मैं तुम पर कदापि निगरान नहीं हूँ।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ وَعَلٰى عَبْدِهِ الْمَسِيْحِ الْمَوْعُوْدِ

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ

वर्ष- 7
अंक- 26

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

मूल्य 575 रुपए वार्षिक

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

29 जुल्कादा 1443 हिज्री कमरी, 30 अहसान 1401 हिज्री शम्सी, 30 जून 2022 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वाणी

जब आज्ञा न मिले तो वापस चले जाओ

(2062) उबैद बिन अमीर से मर्वी है कि हज़रत अबू मूसा अशरी रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत उमर बिन खत्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु से मुलाक़ात के लिए आज्ञा मांगी तो उन्हें आज्ञा नहीं दी गई और ऐसा मालूम होता है कि (हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु) व्यस्त थे। हज़रत अबू मूसा रज़ियल्लाहु अन्हु वापस चले गए। इतने में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़ारिग हुए और फ़रमाया : क्या अब्दुलाह बिन केस रज़ियल्लाहु अन्हु (अबू मूसा की आवाज़ मैं ने सुनी थी? उन्हें (अंदर आने की) इजाज़त दो। आप रज़ियल्लाहु अन्हु से कहा गया कि वह तो वापस चले गए हैं। फिर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनको बुलाया (और दरयाफ़त किया) तो (हज़रत अबू मूसा रज़ियल्लाहु अन्हु ने) कहा : हमें यही हुक्म होता था (कि जब इजाज़त न मिले तो वापस चले जाया करें) तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा : आप रज़ियल्लाहु अन्हु को इस बात पर शहादत लानी होगी। इसलिए वह अंसार की मजालिस तरफ़ चले गए और उनसे पूछा तो उन्होंने कहा : इस मामले में आप रज़ियल्लाहु अन्हु के लए कोई शहादत नहीं देगा, परन्तु वह जो हम सब में से कम-सिन है यानि अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु। तब वह हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु को साथ ले गए। (उन की बात सुन कर) हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा : क्या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का यह इरशाद मुझ से छुपा रह गया? मंडियों में लेन-देन ने मुझे ग़ाफ़िल रखा। इस से उन की यह मुराद थी कि वह तिजारत के लिए बाहर जाया करते थे।

(सही बुख़ारी, भाग 4 किताब अल् बियू, मुद्रित 2008 क़ादियान)

★ ★ ★

सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु सूरत नहल आयत : 70 ثُمَّ كُلِيْ مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ فَاسْلُكِيْ سُبُلَ رَبِّكِ ذُلُلًا ؕ يَخْرُجُ مِنْۢ بُطُوْنِهَا شَرَابٌ مُّخْتَلِفٌ اَلْوَانُهٗ فِيْهِ شِفَآءٌ لِّلنَّاسِ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ में फ़रमाते हैं :

इस में मक्खी की मज़ीद तशरीह करते हुए फ़रमाया कि मक्खी को हम यह वह्यी भी करते हैं कि मुख़्तलिफ़ फूलों फलों से आहार ले और फिर उसको इन माध्यमों से काम लेकर जो हमने तेरे अंदर पैदा किए हैं और अहकाम-ए-इलाही के अनुसार चल कर शहद तैयार कर। फिर फ़रमाता है कि जब वह शहद निकलता है तो वह मुख़्तलिफ़ रंगों और मुख़्तलिफ़ किस्मों का होता है। परन्तु सब किस्मों के और सब रंगों के शहदों में यह विशेषता समान होती है कि वे लोगों के लिए शिफ़ा का माध्यम होते हैं।

इस में इन्सानी वह्यी की तरफ़ इशारा फ़रमाया कि वह वह्यी भी मुख़्तलिफ़ वक़्तोंऔर मुख़्तलिफ़ रंगों में नाज़िल होती रही है। एक नबी की तालीम दूसरे नबी की तालीम से कुछ बातों में मुख़्तलिफ़ होती थी लेकिन बावजूद इस के हर नबी की वह्यी उस क़ौम के लिए जिस के लिए वह नाज़िल होती थी शिफ़ा का मूजिब होती थी।

فَاسْلُكِيْ سُبُلَ رَبِّكِ ذُلُلًا से इस तरफ़ इशारा किया है कि हर इन्सान साहिब-ए- वह्यी हो सकता है लेकिन इस के लिए शर्त यह है कि वह अल्लाह तआला के बताए हुए तरीक़ पर फरमाबरदारी से चले और जहां तक फ़ित्रत का ताल्लुक़ है उसे ख़राब न होने दे। जब वह अपनी फ़ित्रत को पाक रखे और उस वह्यी पर अमल करे जो वह्यी ख़फ़ी के रंग में हर इन्सान बल्कि हर मख़लूक़ पर नाज़िल होती है तो फिर अल्लाह तआला उस पर वह वह्यी नाज़िल करता है जो शहद की मानिंद होती है। अर्थात ख़ालिस होती है और इस में बनीनौ इन्सान के लिए शिफ़ा की ख़ासीयत होती है अर्थात इन्सानी कमज़ोरियों को दूर कर के इन्सान को कामिल बना देती है।

اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ इन में इस तरफ़ इशारा किया गया है कि बग़ैर वही इलाही के दुनिया में कोई काम नहीं मुत्तक़ी की कोई भी दुआ वास्तव में ज़ाए नहीं होती, अगर उसका अज़ीज़ बंदा अपनी कमज़ोरी और ग़लती और ना-वाक़िफ़ी की वजह से किसी ऐसी चीज़ के लिए दुआ कर बैठे जो उसके हक़ में हानि प्रदान करने वाली है तो वह उसको रद्द कर देता है और उसके बजाय उससे भी बेहतर उसको अता करता है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का उपदेश

दाओं की क़बूलियत का फ़ैज़ उन लोगों को मिलता है जो मुत्तक़ी होते हैं। अब मैं बताऊँगा कि मुत्तक़ी कौन होते हैं। परन्तु अभी मैं एक और संदेह का निवारण करना ज़रूरी समझता हूँ और वह यह है कि कुछ लोग जो मुत्तक़ी होते हैं बज़ाहिर उन की कुछ दुआएं उनके इच्छा अनुसार पूरी नहीं होती हैं, यह क्यों होता है? यह बात याद रखने के काबिल है कि उन लोगों की कोई भी दुआ वास्तव में ज़ाए नहीं जाती, लेकिन चूँकि इन्सान आलिमुलग़ैब नहीं है और वह नहीं जानता कि इस दुआ के नताइज उसके हक़ में क्या असर पैदा करने वाले हैं। अतः अल्लाह तआला कमाल शफ़क़त और मेहरबानी से इस दुआ को अपने बंदा के लिए इस सूरत में मुंतक़िल कर देता है, जो उसके वास्ते मुफ़ीद और नतीजाख़ेज़ होती है। जैसे एक नादान बच्चा साँप को एक ख़ूबसूरत और नरम वस्तु समझ कर पकड़ने का साहस करे या आग को रोशन देखकर अपनी माँ से मांग बैठे, तो क्या यह मुम्किन है कि वह माँ ख़ाह वह कैसी ही नादान से नादान भी क्यों न हो। कभी पसंद करेगी कि उस का बच्चा साँप को पकड़े या अपनी ख़ाहिश के मुवाफ़िक़ आग का एक रोशन कोयला उसके हाथ पर रख दे? कदापि नहीं क्योंकि वह जानती है कि यह उसकी ज़िंदगी को नुकसान पहुंचाए गा। अतः अल्लाह तआला जो आलिमुलग़ैब और समस्त चीजोंके जानने वाला है और मेहरबान माँ से भी ज़्यादा रहीम करीम है और माँ के दिल में भी यह प्रेम और दया उसी ने डाली है वह क्योंकर गवारा कर सकता है कि अगर उस का अज़ीज़ बंदा अपनी कमज़ोरी और ग़लती और ना-वाक़िफ़ी की वजह से किसी ऐसी चीज़ के लिए दुआ कर बैठे जो उसके हक़ में हानिकारक है तो वह इस को फ़ील-फ़ौर मंज़ूर करले। नहीं बल्कि वह उस को रद्द कर देता है और उसके बजाय उस से भी बेहतर उस को अता करता है और वह यक़ीनन समझ लेता है कि यह मेरी अमुक दुआ का असर और नतीजा है। अपनी ग़लती पर भी उस को इत्तिला मिलती है। उद्देश्य यह कहना बिल्कुल ग़लत है कि मुत्तक़ियों की भी कुछ दुआएं कबूल नहीं होती। नहीं उनकी तो हर दुआ क़बूल होती है। हाँ अगर वह अपनी कमज़ोरी और नादानी की वजह से कोई ऐसी दुआ कर बैठें जवान के लिए उम्दा नतायज पैदा करने वाली न हो। तो अल्लाह तआला इस दुआ के बदला में इन को वह चीज़ अता करता है, जो उन की मांगी हुई चीज़ का उत्तम बदला हो। (मल्-फ़ूज़ात, भाग 1, पृष्ठ 378 मुद्रित 2018 क़ादियान) ★ ★ ★

जो इन्सान कहता है कि मैं स्वयं हिदायत का काम कर लूंगा वह ग़लती पर है कलाम-ए-इलाही के बग़ैर कामयाब ज़िंदगी असम्भव है यहाँ तक कि जानवर भी वह्यी के मुहताज हैं और उन पर एक प्रकार की वह्यी नाज़िल होती है जिसकी नुमायां मिसाल शहद की मक्खी में पाई जाती है

शेष पृष्ठ 12 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

ख़ुत्बः जुमअः

"मैं ख़ुदा की तरफ़ से एक क़ुदरत के रंग में ज़ाहिर हुआ और मैं ख़ुदा की एक मुजस्सम क़ुदरत हूँ
और मेरे बाद कुछ और वजूद होंगे जो दूसरी क़ुदरत का मज़हर होंगे" (हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

यौम-ए-ख़िलाफ़त की मुनासबत से ख़िलाफ़त-ए-हक्का इस्लामिया अहमदिया का महत्तव और बरकात तथा ख़िलाफ़त के साथ इलाही समर्थन के नज़ारों का संक्षिप्त वर्णन

यह भी स्पष्ट रहे कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का यह कहने के बाद फिर ख़ामोश होना कि
तुम में ख़िलाफ़त अला मिन्हाज-ए-नबुव्वत आख़िरी ज़माने में क़ायम होगी इस बात का इज़हार है कि यह एक लंबा अरसा चलने वाला निज़ाम है

ख़ुश-क़िस्मत हैं हम में से वे लोग जो ख़िलाफ़त-ए-अहमदिया के साथ हमेशा जुड़े रहें और अपनी नसलों को भी इस की तलक़ीन करते रहें
और बदक़िस्मत हैं वे जो
ख़िलाफ़त अहमदिया को किसी युग तक सीमित करना चाहते हैं या यह सोच रखते हैं, ऐसे लोग हमेशा की तरह नाकामी और नामुरादी देखेंगे

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने यह जो भविष्यवाणियाँ फ़रमाई हैं, अल्लाह तआला के जिन वादों का वर्णन फ़रमाया है
उन्होंने अपने कमाल तक पहुंचना है और यह आप के बाद जो जारी निज़ाम-ए-ख़िलाफ़त है इस के ज़रीया से ही पहुंचना है

हर अहमदी का ख़िलाफ़त से भी इख़लास-और-वफ़ा का ताल्लुक़ होना चाहिए और वही बैअत का हक़ अदा करने वाले होंगे

जो इस मयार को हासिल करने वाले होंगे और जब यह होगा तभी हम आज यौम-ए-ख़िलाफ़त मनाने के हक़ को अदा करने वाले होंगे

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 27 मई 2022 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ
رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّا كَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ
وَلَاالضَّآلِّيْنَ

आज 27/मई है। यह दिन जमाअत अहमदिया में यौम-ए-ख़िलाफ़त के नाम से जाना जाता है। हम हर वर्ष यौम-ए-ख़िलाफ़त के जलसे इस दिन या इस दिन के आगे पीछे करते हैं लेकिन क्यों? इस सवाल का जवाब हमें हर वक़त सामने रखना चाहिए और अपनी नसलों, अपने बच्चों को भी इस पर ग़ौर करने और सोचने के लिए कहना चाहिए। इस दिन आरंभ 27 मई 1908 ई. को हुआ था जब अल्लाह तआला ने अपने वादों के मुताबिक़ हम पर फ़ज़ल फ़रमाते हुए जमाअत अहमदिया में ख़िलाफ़त का निज़ाम जारी फ़रमाया था। अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से आपकी जमाअत की तरक़्क़ी के लिए जो वादा फ़रमाया था उसे उस दिन पूरा फ़रमाया। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक अरसा से अपनी जमाअत को इस बात पर तैयार फ़र्मा रहे थे कि कोई शख़्स मौत से बाहर नहीं। अम्बिया भी जब वे अपना काम पूरा कर लेते हैं तो फिर अल्लाह तआला उन्हें भी उठा लेता है। आप बार जमाअत को इस बात पर तैयार फ़र्मा रहे थे कि आप अलैहिस्सलाम की वापसी का वक़्त क़रीब है लेकिन साथ ही यह ख़ुशख़बरी भी देते थे कि आप अलैहिस्सलाम की क़ायम करदा जमाअत ने फूलना है, फलना है और फैलना है और अल्लाह तआला के जो आप वादे हैं वह निश्चित पूरे होने हैं। जमाअत की तरक़्क़ी अल्लाह तआला के फ़ज़ल से होनी है और कोई नहीं जो इस तरक़्क़ी को रोक सके।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भी एक इरशाद में अपने ज़माने से लेकर आख़रीन के ज़माने तक अर्थात हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और फिर बाद में आपके जारी निज़ाम ख़िलाफ़त का नक़्शा खींचा है। इसलिए आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपने सहाबा की मजलिस में वर्णन फ़रमाते हैं : तुम में नबुव्वत क़ायम रहेगी जब तक अल्लाह चाहेगा अर्थात आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का वजूद सहाबा में मौजूद रहेगा। फिर वह इस को उठा लेगा और ख़िलाफ़त अला मिनहाज-ए- नबुव्वत क़ायम होगी। अर्थात वह ख़िलाफ़त-ए-राशिदा क़ायम होगी जो मुकम्मल तौर पर नबुव्वत के क़दमों पर चलने वाली होगी। फिर अल्लाह तआला जब चाहेगा इस नेअमत को भी उठा लेगा। पिछले कुछ अरसा से मैं बदरी सहाबा के सिलसिला में ख़ुलफ़ाए राशिदीन का भी वर्णन कर रहा हूँ। आजकल हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु का ज़िक्र हो रहा है। समस्त ख़ुल्फ़ा के ज़िक्र में यह बात चमकते सूरज की तरह वाज़ेह है कि सबने बड़े बेनफ़्स हो कर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सुन्नत पर चलते हुए और क़ुरआन-ए-करीम को अपना दस्तूरुल अमल बनाते हुए अपना अरसा ख़िलाफ़त गुज़ारा। मानो क़दम क़दम पर मिनहाज नबुव्वत पर क़ायम रहने की कोशिश की। बहरहाल आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपने इरशाद को जारी रखते हुए फ़रमाते हैं कि फिर उस की तक़दीर के मुताबिक़ कष्ट देने वाली बादशाहत क़ायम होगी जिससे लोग तंग होंगे और तंगी महसूस करेंगे। यह दौर ख़त्म होगा तो उस की दूसरी तक़दीर के मुताबिक़ इस से भी बढ़कर जाबिर बादशाहत क़ायम होगी।

और तारीख़ ने यह भी देखा बल्कि आज तक मुस्लमानों के दीन से हटे हुए जो हुकमरान हैं अपनी प्रजा से यही कुछ कर रहे हैं चाहे सयासी हुकूमतें हों या बादशाहत। एक गिरोह हो या दूसरा। जिसके हाथ में भी हुकूमत आए उस पर दुनिया ग़ालिब रहती है। बहरहाल आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि जब यह सब कुछ उम्मत के साथ होगा तो फिर अल्लाह तआला का रहम जोश में आएगा और इस ज़ुलम-ओ-सितम के दौर को ख़त्म कर देगा।

फिर ख़िलाफ़त अला मिन्हाज-ए-नबुव्वत क़ायम होगी। यह फ़र्मा कर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ख़ामोश हो गए। (मस्नद अहमद बिन हम्बल, भाग 6 पृष्ठ 285 हदीस अल् नुमान बिन बशीर, हदीस नंबर 18596 आलेमुल क़ुतुब बेरूत 1998 ई.)

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ज़ुलम-ओ-सितम के दौर को ख़त्म करने की जो भविष्यवाणी फ़रमाई थी वे उन लोगों के लिए थी जो ख़ातमुल ख़ुलफ़ा मसीह मौऊद और महदी माहूद की बैअत में आएँगे और उस की तालीम के अनुसार इस पर अमल करेंगे।

अल्लाह तआला ने तो इंतिज़ाम फ़र्मा दिया है। अगर लोग इस इंतिज़ाम के अधीन न आएं, अपनी ज़िद पर क़ायम रहें तो फिर उस का वही नतीजा निकलता है और निकला है जो आजकल मुस्लमान देख रहे हैं। अल्लाह तआला उन लोगों को

शेष पृष्ठ 6 पर

ख़ुलफ़ा-ए-अहमदियत की तहरीरो तक़ारीर में लोगों के ज़हनों में पाए जाने वाले जिन्नात के बारे में प्रत्येक ऐसी कल्पनाएँ और मफ़हूम की नफ़ी की गई है

जो इन्सानों पर क़बज़ा करले, महिलाओं को चिमट जाएं, लोगों को सताए या उनके क़ाबू में आ जाए और उन्हें उनकी मनपसंद की चीज़ें ला-ला कर दें

मेरा अपना ज़ाती अनुभव इस बारे में यह है कि कई विभिन्न वक़्तों में लोगों ने मुझे ऐसे पत्र लिखे हैं कि जिन्नात उनके घर में आते और उपद्रव करते हैं, मैं ने हमेशा अपने ख़र्च पर उस स्थान का अनुभव करना चाहा लेकिन हमेशा ही या तो यह उत्तर मिला कि अब उनकी आमद बंद हो गई है, या यह कि आपके पत्र आने या आपकी आदमी आने की बरकत से वे भाग गए हैं

यदि इस तफ़सीर के पढ़ने वालों में से किसी साहब को इस मख़लूक़ का अनुभव हो और वह मुझे लिखें तो मैं अपने ख़र्च पर अब भी अनुभव कराने को तैयार हूँ

अन्यथा जो कुछ मैं असंख्य क़ुरआन के दलायल से समझा हूँ यही है कि यह केवल ख़्याल और वहम है या मदारियों के तमाशे हैं

सय्यदना हज़रत अमीरुल मो'मिनीन ख़लीफ़तुल मसीह अल् ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से पूछे जाने वाले महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर

(क़िस्त17)

प्रश्न : एक मित्र ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की ख़िदमत अक़्दस में लिखा कि "तारिक़ मैगज़ीन" में प्रकाशित होने वाले एक इंटरव्यू में जिन्नों का वर्णन किया गया है जिसमें इंटरव्यू देने वाले ने हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल् राबे रहमहुल्लाह की बज़ाहिर यह विचार शैली वर्णन की है कि जिन्नात का वजूद मौजूद है, जो हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु की विचार शैली के विपरीत है। इस पर मुख़ालेफ़ीन आरोप करते हैं। इस का क्या उत्तर दिया जा सकता है? हुज़ूर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने पत्र तिथि 18 मार्च 2021 ई. में इस प्रश्न का निमंलिखित उत्तर प्रदान फ़रमाया। हुज़ूर ने फ़रमाया :

उत्तर : क़ुरआन-ए-करीम और हदीस में जिन्न का शब्द कसरत के साथ इस्तिमाल हुआ है। जिसके अर्थ छुपे रहने वाली चीज़ के हैं। जो ख़ाह अपनी बनावट की वजह से मख़फ़ी हो या अपनी आदात के तौर पर मख़फ़ी हो। और ये शब्द विभिन्न सीगों और मुश्तक़ात में मुंतक़िल हो कर बहुत से अर्थों में इस्तिमाल होता है और उन सब अर्थों में मख़फ़ी और पस-ए-पर्दा रहने का मफ़हूम मुश्तर्क तौर पर पाया जाता है।

इसलिए जिन वाले माद्दा से बनने वाले विभिन्न शब्द उदाहरणतः जिन्न साया करने और अंधेरे का पर्दा डालने, गर्भ माँ के पेट में मख़फ़ी बच्चा, जुनून वह रोग जो अक़ल को ढांक दे, जिनान सीने के अंदर छुपा दिल, जन्नता बाग़ जिसके दरख़्तों के घने साय ज़मीन को ढाँप दें, मजन्ना ढाल जिसके पीछे लड़ने वाला अपने आपको छुपा ले, जान्ने साँप जो ज़मीन में छिप कर रहता हो, जनन क़ब्र जो मुर्दे को अपने अंदर छुपा ले और जुन्ना ओढ़नी जो सिर और बदन को ढाँप ले के अर्थों में इस्तिमाल होते हैं।

फिर जिन का शब्द बा पर्दा महिलाओं के लिए भी इस्तिमाल होता है। तथा ऐसे बड़े-बड़े रईसों और बड़े लोगों के लिए भी बोला जाता है जो लोगों से इख़तिलात नहीं रखते। तथा ऐसी क़ौमों के लोगों के लिए भी इस्तिमाल होता है जो भूगोलिक रूप से दूर दराज़ के इलाक़ों में रहते और दुनिया के दूसरे हिस्सों से कटे हुए हैं।

इसी तरह अंधकार में रहने वाले जानवरों और बहुत बारीक कीड़ों मकोड़ों और जरासीम के लिए भी यह शब्द इस्तिमाल होता है। इस लिए हज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने रात को अपने खाने पीने के बर्तनों को ढाँप कर रखने का इरशाद फ़रमाया और हड्डीयों से इस्तिंजा मना फ़रमाया और उसे जिन्नों अर्थात् चियूंटियों, दीमक और अन्य जरासीम की ख़ुराक क़रार दिया।

इसके अतिरिक्त जिन्न का शब्द गुप्त बुरे फ़रिश्तों अर्थात् शैतान और गुप्त अच्छे फ़रिश्तों अर्थात् मलायका के लिए भी इस्तिमाल होता है। जैसा कि फ़रमाया وَاَنَّامِنَّا الصَّالِحُوْنَ وَمِنَّا دُوْنَ ذٰلِكَ۔ (सूरः अल् जिन्न : 12)

जमाअती लिटरेचर विशेषता हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और ख़ुलफ़ाए अहमदियत की तहरीर-ओ-तक़ारीर में जिन्न का शब्द सधारणतः इसी मफ़हूम में वर्णन हुआ है और इस सारे कलाम में लोगों के ज़हनों में पाए जाने वाले जिन्नात के बारे में प्रत्येक ऐसी कल्पनाएँ और मफ़हूम की नफ़ी की गई है जो इन्सानों पर क़बज़ा कर लें, महिलाओं को चिमट जाएं, लोगों को सताएं या उनके क़ाबू में आजाऐं और उन्हें उनकी मन पसंद की चीज़ें ला ला कर दें। ऐसे जिन्न वहमी लोगों के दिमाग़ों की बनावट है, जिन्हें इस्लामी शिक्षा तस्लीम नहीं करती। इसलिए जिन्नात के वजूद के विषय में एक प्रश्न के उत्तर में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया

"इस पर हमारा ईमान है परन्तु इर्फ़ान नहीं तथा जिन्नात की हमें अपनी इबादत, मुआशरत, तमद्दुन और सियासत इत्यादि विषयों में आवश्यकता ही क्या है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने क्या उम्दा फ़रमाया है :

مِنْ حُسْنِ إِسْلَامِ الْمَرْءِ تَرْكُهُ مَا لَا يَعْنِيهِ

इन्सानी उमर बहुत थोड़ी है यात्रा बड़ी कठोर और लम्बी है इस वास्ते ज़ाद-ए-राह लेने की तैयारी करनी चाहिए इन बेहूदा और व्यर्थ के कामों में पड़े रहना मोमिन की शान से बईद है ख़ुदा के साथ ही सुलह करो और उसी पर भरोसा करो इस से बढ़कर कोई क़ादिर नहीं। ताक़तवर नहीं।"

(मल्फ़ूज़ात, भाग 3, पृष्ठ 403 प्रकाशन 2016 ई.)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह प्रथम रज़ियल्लाहु अन्हु तसव्वुराती जिन्नों का इंकार करते हुए फ़रमाते हैं :

"यहां एक लड़का रहता था। इस का नाम अब्दुल अली था। इसके बाप को जिन्नात के हाज़िर करने का बड़ा दावा था। वह मेरे साथ अधिकतर रहा। लेकिन कभी भी मेरे सामने तो वह जिन्नात को हाज़िर नहीं कर सका।" (मिर्क़ातुल यकीन फ़ी हयाते नूरुद्दीन, पृष्ठ 249 प्रकाशन फ़रवरी 2002 ई.)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपनी विभिन्न पुस्तकों, ख़ुत्बों और ख़ताबात में जिन्नों के मसले को विभिन्न पैरायों में बड़ी तफ़सील से वर्णन फ़रमाया है और क़ुरआन-ए-करीम अहादीस नब्वी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम में वर्णन शिक्षा की रोशनी में इस किस्म के जिन्नो के वजूद का पुर्णतः खंडन फ़रमाया जो अवाम के ज़हनों में मौजूद है कि वे लोगों के सिरों पर चढ़ जाते हैं या कुछ लोगों के क़बज़े में आ जाते हैं जो फिर इन जिन्नों से अपनी इच्छा से काम करवाते हैं। इसलिए जिन्नों के बारे में एक प्रश्न के उत्तर में हुज़ूर ने लिखवाया :

"मैं जिन्नात की हस्ती का क़ायल हूँ परन्तु इस बात का क़ायल नहीं कि वे किसी के सिर पर चढ़ते हैं या मेवा ला कर देते हैं। जैसे फ़रिश्ते किसी के सिर पर नहीं चढ़ते जिन्नात भी नहीं। जिस तरह फ़रिश्ते इन्सानों से मुलाक़ात करते हैं इसी तरह जिन्नात भी मुलाक़ात करते हैं लेकिन जिस तरह उनका वजूद उनको आज्ञा देता है। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शिक्षा की निसबत मैं समझता हूँ कि इन्सान और जिन्न सब के लिए है और आप पर ईमान लाना जिन्नात के लिए भी आवश्यक है। आपकी वह्यी पर अमल करना भी। परन्तु मेरा यही अक़ीदा इस बात का भी बायस हुआ है कि मैं यह एतिक़ाद भी रखूं कि वे न किसी के सिर पर चढ़ सकते हैं और न ही मेवा ला कर दे सकते हैं। क़ुरआन-ए-करीम में आता

शेष पृष्ठ 11 पर

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की आयरलैण्ड की यात्रा, सितम्बर 2014 ई. (भाग-12)

डबलिन शहर की ओर यात्रा

(रिपोर्टः अब्दुल माजिद ताहिर साहब, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादकः सय्यद मुहयुद्दीन फ़रीद)

इसके बाद इस अवसर पर उपस्थित जमाअत के लोग ने भी एक ग्रुप की सूरत में तस्वीर खिचवाने का सौभाग्य पाया।

जब हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ मस्जिद मर्यम से वापस होटल जाने के लिए गाड़ी के पास पधारे तो साऊँड सिस्टम के लिए काम करने वाले आइरिश ग़ैर मुस्लिम मित्र हुज़ूर अनवर के पास आए और तस्वीर खिचवाने की इच्छा का प्रकटन किया। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने प्रेम पूर्वक उन्हें तस्वीर खिचवाने का सौभाग्य प्रदान किया। वह इस पर बेहद ख़ुश थे और हुज़ूर अनवर को यहां देखकर और हुज़ूर अनवर के साथ नमाज़ें अदा करके पहले ही कह चुके हैं कि मुझे यहां ख़ुदा तआला मिला है।

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ वापस होटल पधारे। गालवे से डबलिन रवानगी।

आज प्रोग्राम के अनुसार गालवे से डबलिन के लिए प्रस्थान था। तीन बजकर 50 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ होटल से बाहर पधारे।

गालवे जमाअत के लोगों पुरुष तथा महिलाए और बच्चे बच्चियां हुज़ूर अनवर को अलविदा कहने के लिए होटल के बाहर एकत्र थें। बच्चों और बच्चियों के ग्रुप अलविदाई दुआइया नज़्में पढ़ रहे थे। हुज़ूर अनवर ने अपना हाथ बुलंद करके सबको अस्सलामो अलैकुम कहा और दुआ करवाई। इसके बाद यहां से डबलिन के लिए प्रस्थान हुआ।

गालवे से डबलिन की दूरी 120 मील है एक घंटा 50 मिनट की यात्रा के बाद पाँच बजकर 40 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की होटल Castleknock तशरीफ़ आवरी हुई। होटल से बाहर डबलिन जमाअत के लोगों पुरुष तथा महिलाओं ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ को स्वागतम कहा।

डाक्टर अब्दुल मुनिम साहब अपने अज़ीज़ों के साथ इस अवसर पर उपस्थित थे। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने डाक्टर अब्दुल मुनिम साहब से उनकी पत्नी डाक्टर रूबीना क्रीम साहबा की वफ़ात पर दुःख का प्रकटन फ़रमाया और मरहूमा के अज़ीज़ों से हुज़ूर अनवर ने ताज़ियत का इज़हार फ़रमाया और मरहूमा के दोनों वक्फे नौ बेटों को अपने साथ लगाया और प्यार किया।

हज़रत बेग़म साहबा मद्दा ज़िल्लाहु अलाली ने मरहूमा की रिश्तेदार महिलाओं से प्रकटन ताज़ियत फ़रमाया और मरहूमा के दोनों बच्चों को अपने पास बुला कर प्यार किया।

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपने रिहायशी अपार्टमेंट में तशरीफ़ ले गए।

डाक्टर रूबीना करीम साहिबा 27 सितम्बर 2014 को आयरलैंड में वफ़ात पागएं। मरहूमा लंबा अरसा आयरलैंड की लजना की जनरल सेक्रेटरी और फिर सेक्रेटरी माल रहें और अपनी वफ़ात तक ईस्ट रीजन की नायब सदर लजना स्थानीय का कर्तव्य भी अंजाम देती रहीं। अपनी वफ़ात से तीन चार दिन पूर्व हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से मुलाक़ात का भी सौभाग्य था।

आठ बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने पधार कर नमाज़ मग़रिब-ओ-इशा जमा करके पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ होटल की लॉबी में तशरीफ़ ले आए और नैशनल सदर जमाअत आयरलैंड डाक्टर मुहम्मद अनवर देश साहब सदर अन्सारुल्लाह डाक्टर अलीमुद्दीन साहब और मुबल्लिग़ इंचार्ज आयरलैंड इब्राहीम नोंन साहब और मुबल्लिग़ सिलसिला आयरलैंड रबीब अहमद मिर्ज़ा साहब को प्रेम पूर्वक अपने दस्तख़तों और दुआइया कलिमात के पुस्तक The Conference of World Religions (Guildhall) अता फ़रमाए।

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपने रिहायशी अपार्टमेंट में तशरीफ़ ले गए।

29 सितम्बर 2014 दिन सोमवार

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने सुबह छः बजे पधार कर नमाज़-ए-फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़-ए-फ़ज्र की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपने रिहायशी हिस्सा में तशरीफ़ ले गए।

आज प्रोग्राम के अनुसार डबलिन से लंदन के लिए प्रस्थान था। डबलिन जमाअत के लोगों पुरुष और महिलाए हुज़ूर अनवर को अलविदा कहने के लिए होटल से बाहर एकत्र थीं। सुबह छः बजकर बीस मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ होटल से बाहर पधारे। हुज़ूर अनवर ने अपना हाथ बुलंद करके सबको अस्सलामो अलैकुम कहा और दुआ करवाई और क़ाफ़ला डबलिन बंदरगाह के लिए रवाना हुआ।

सात बजकर दस मिनट पर पोर्ट पर आमद हुई। जहां VIP प्रोटोकोल प्रबन्ध के तहत पोर्ट इंतिज़ामीया की एक गाड़ी क़ाफ़ला की गाड़ियों को Escort कुर्ती हुई Ferry के अंदर ले गई। इस तरह क़ाफ़ले की गाड़ियां सबसे पहले Irish Ferries में बोर्ड हुईं

इस आइरिश Ferry के विशेषता प्रोटोकोल स्टाफ़ ने हुज़ूर अनवर को स्वागतम कहा और हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ एक विशेष अपार्टमेंट में तशरीफ़ ले गए।

12 मनाज़िल पर आधारित यह आइरिश समुद्री जहाज़ अपने समय पर आठ बजकर दस मिनट पर (आयरलैंड) की पोर्ट से बर्तानिया की पोर्ट Holyhead के लिए रवाना हुआ। इस जहाज़ को पहली छः मनाज़िल केवल कारों और ट्रकों के पार्क करने के लिए हैं और बाक़ी छः मनाज़िल पर मुसाफ़िरों के लिए विभिन्न Launges और कैफे, रेस्टोरेंट Shopes और विभिन्न अपार्टमेंट्स बने हुए हैं। इस जहाज़ की लंबाई 209 मीटर और ऊंचाई 51 मीटर है। इस जहाज़ में दो हज़ार मुसाफ़िरों की गुंजाइश है। इसके अतिरिक्त 1342 कारों और 240 ट्रकों के पार्क होने की गुंजाइश है। यदि ट्रकों को निकाल दिया जाए तो लगभग 1800 कारें इस बहरी जहाज़ पर बोर्ड की जा सकती हैं।

लगभग तीन घंटे पच्चीस मिनट की यात्रा के बाद ग्यारह बजकर 35 मिनट पर Ferry बर्तानिया की बंदरगाह Holyhead पहुंची और एक विशेषता प्रोटोकोल प्रबन्ध के तहत हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो और क़ाफ़ला की गाड़ियां सबसे पहले जहाज़ से बाहर आइ

पोर्ट पर आदरणीय डाक्टर नसीर अहमद रीजनल अमीर नॉर्थ रीजन हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ स्वागत के लिए उपस्थित थे।

जमाअत नॉर्थ वेल्ज़ में आमद

जमाअत नॉर्थ वेल्ज़ ने अपने सैंटर और मस्जिद के बनने के लिए एक इमारत Rhyl Town में फ़रवरी 2014 में ख़रीदी है। यहां पोर्ट Holyhead

से लंदन जाते हुए रास्ता में रुक कर इस इमारत के निरीक्षण और यहां नमाज़ जुहर तथा अस्र की अदायगी का प्रोग्राम था। यहां पोर्ट से Rhy town की दूरी 50 मील है।

यहां पोर्ट से रवाना हो कर लगभग पौने एक बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की जमाअत नॉर्थ वेल्ज़ North Wales आमद हुई। जूंही हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ गाड़ी से बाहर पधारे तो आदरणीय कलीम अहमद बाजवा साहब सदर जमाअत नॉर्थ वेल्ज़, क़ाज़ी नासिर अहमद भूतपूर्व रीजनल अमीर नॉर्थवेस्ट रीजन, ग़ुलाम अब्बास साहब ज़ईम अन्सारुल्लाह, अताउल अलीम साहब क़ायद ख़ुद्दामुल अहमदिया Liverpool नॉर्थ वेल्ज़ और मंसूर अहमद ख़ान साहब रीजनल क़ायद नॉर्थवेस्ट ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ को स्वागतम कहा और अपने आक़ा का स्वागत किया।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का स्वागत करने वालों में आदरणीय मलिक मुहम्मद अकरम साहब मुबल्लिग़ मानचैसटर आदरणीय मुहम्मद अहमद ख़ुरशीद साहब मुबल्लिग़ नॉर्थवेस्ट, आदरणीय चौधरी अनवारुल हक़ साहब सदर जमाअत Stockport आदरणीय साजिद अराईं साहब सदर जमाअत मानचैसटर साउथ और एक स्थानीय अंग्रेज़ अहमदी मित्र अहमद मुबारक साहब भी उपस्थित थे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने इन स्वागत करने वाले सभी लोगों को हाथ मिलाने के सौभाग्य बख़्शा और इसके बाद इस इमारत का निरीक्षण फ़रमाया।

इस इमारत का नींव का पत्थर 1873 ई. में Mr. Robert Jones ने रखा जो उस समय इस क्षेत्र में कमिशनर थे। 1895ए में इस इमारत मुकम्मल हुई और यह Calvinist Methodist Community के ज़ेर-ए-इस्तेमाल रही। यह इमारत दो मनाज़िल पर आधारित है और इस का निर्माण हिस्सा 6000 मुरब्बा फुट है।

पहली मंज़िल ग्राऊंड फ़्लोर पर एक बड़ा हाल 124 मुरब्बा फिट और एक छोटा हाल 72 मुरब्बा फुट का है । इसके अतिरिक्त चार दफ़्तार और किचन की सहूलत भी है। पहली मंज़िल के दोनों हालों में 242 लोग नमाज़ अदा कर सकते हैं।

दूसरी मंज़िल पर भी 96 मुरब्बा फुट का एक हाल है। जिसमें 133 लोग नमाज़ अदा कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त विभिन्न दफ़्तार और किचन की सहूलत प्राप्त है। दोनों मनाज़िल पर 9 बाथरूम और वाश रुम, बुयूतुल की सहूलत भी प्राप्त है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने इस सारी इमारत का तफ़सीली निरीक्षण फ़रमाया और स्थानीय इंतिज़ामीया से विभिन्न मामलों में दरयाफ़्त फ़रमाए और इस सैंटर के क़रीब रहने वाले लोगों के बारे में दरयाफ़्त फ़रमाया। सदर साहब जमाअत ने बताया कि अब यहां निरंतर नमाज़ों की अदायगी होती है। नमाज़-ए-जुमा, जमाअत की मीटिंगज़, और दूसरे विभिन्न जमाअती फंक्शनज़ होते हैं। अब इस जगह को मस्जिद की शक्ल में तबदील किया जाएगा। इसके बाद डेढ़ बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने नमाज़ जुहर तथा अस्र जमा करके पढ़ाई।

नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ इस इमारत के रिहायशी हिस्सा में तशरीफ़ ले गए।

मध्याह्न के खाने के बाद यहां से आगे लंदन प्रस्थान का प्रोग्राम था। पौने तीन बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ बाहर पधारे और यहां की स्थानीय जमाअत और इस रीजन के जमाअती अधिकारियों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ तस्वीर खिचवाने का सौभाग्य पाया। और हाथ मिलाने के सौभाग्य भी प्राप्त किया।

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने दुआ करवाई और क़ाफ़ला लंदन के लिए रवाना हुआ।

यहां से लंदन की दूरी 250 मील है पौने तीन बजे यहां से रवाना हो कर सात बजकर दस मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की मस्जिद फ़ज़ल लंदन तशरीफ़ आवरी हुई। जहां जमाअत के लोग पुरुष और महिलाओं ने बड़ी संख्या में अपने प्यारे आक़ा को स्वागतम कहा।

मस्जिद के बाहरी सेहन में एक हिस्सा में महिलाओं जमा थीं। जबकि दूसरी ओर पुरुष लोगों हुज़ूर अनवर की आमद के मुंतज़िर थे

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपना हाथ बुलंद करके सबको अस्सलामो अलैकुम कहा और हिदायत फ़रमाई कि नमाज़ की तैयारी करें।

सात बजकर 20 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने मस्जिद फ़ज़ल में पधार कर नमाज़ मगरिब पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपने रहने के स्थान पर तशरीफ़ ले गए

सय्यदना हज़रत अमीरुल मौमेनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की आयरलैंड की इस यात्रा में जिन लोगों को हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की मय्यत में यात्रा करने का सौभाग्य अता हुआ उनके नाम निमंलिखित हैं।

हज़रत सय्यदा अम्तुस सबूह साहिबा पत्नी हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़

आदरणीय मुनीर अहमद जावेद साहब। प्राईवेट सेक्रेटरी
आदरणीय मुबारक अहमद ज़फ़र साहब, ऐडीशनल वकीलुल माल लंदन
आदरणीय बशीर अहमद साहब, दफ़्तर प्राईवेट सेक्रेटरी
आदरणीय आबिद वहीद ख़ान साहब, मीडिया आफिस
आदरणीय अमीर अलीम साहब, इंचार्ज मख़ज़न-ए-तसावीर
आदरणीय मुहम्मद अहमद नासिर साहब, नायब अफ़्सर हिफ़ाज़त
आदरणीय नासिर अहमद सईद साहब, सिक्योरिटी स्टाफ़
आदरणीय महमूद अहमद ख़ान साहब, सिक्योरिटी स्टाफ़
आदरणीय एजाज़ रहमान साहब, सिक्योरिटी स्टाफ़
आदरणीय मुहसिन ऐवान साहब, सिक्योरिटी स्टाफ़
आदरणीय ख़्वाजा अब्दुल क़ुद्दूस साहब सिक्योरिटी स्टाफ़
विनीत अब्दुल माजिद ताहिर, ऐडीशनल वकील इलतब्शीर लंदन

इसके अतिरिक्त आदरणीय डाक्टर अब्दुल मनानन जदरान साहब और आदरणीय नदीम अहमद अम्मीनी साहब को अपनी गाड़ियों के साथ क़ाफ़ला में शामिल होने का सौभाग्य नसीब हुआ। (उद्धरित बदर उर्दू 13 नवंबर 2014)

शेष आगे .....

★ ★ ★

हदीस नब्वी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और यदि खड़े होकर संभव न हो तो बैठ कर और यदि बैठ कर भी संभव न हो तो पीठ के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अः 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY, JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

पृष्ठ02 का शेष

भी अक़्ल और समझ दे और ये आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ग़ुलाम सादिक़ की पहचान करने वाले हों न कि इन्कार करके मसीह मौऊद की जमाअत पर ज़ुलम और अत्याचार में बढ़ने वाले हों। बहरहाल यह भी वाज़िह हो कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का यह कहने के बाद फिर ख़ामोश होना कि तुम में ख़िलाफ़त अला मिन्हाज-ए-नबुव्वत आख़िरी ज़माने में क़ायम होगी इस बात का इज़हार है कि यह एक लंबा अरसा चलने वाला निज़ाम है।

यह जो कुछ लोग कुछ बातों को न समझने की वजह से ये बातें करते हैं कि इस ख़ामोशी का मतलब यह है कि ये निज़ाम भी जल्द ख़त्म हो जाएगा अर्थात मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बाद जो निज़ाम ख़िलाफ़त है। ये सब लोग ग़लती खाने वाले हैं। ख़ुद हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस बात की वज़ाहत फ़र्मा दी है कि यह निज़ाम जारी रहने वाला निज़ाम है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से अल्लाह तआला ने जो वादे फ़रमाए हैं वे पूरे होने वाले हैं और ज़मीन-और-आसमान टल सकते हैं लेकिन ख़ुदाई वादों को पूरा होने से कोई नहीं रोक सकता। बहरहाल इस बात की वज़ाहत कि यह निज़ाम-ए-ख़िलाफ़त जारी रहने वाला निज़ाम है इस बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम जमाअत को सम्बोधित करते हुए फ़रमाते हैं: "हे अज़ीज़ो! जबकि क़दीम से अल्लाह की सुन्नत यही है कि ख़ुदा तआला दो क़ुदरतें दिखलाता हैता मुख़ालिफ़ों की दो झूठी ख़ुशियों को पामाल कर के दिखलावे। अतः अब मुम्किन नहीं है कि ख़ुदा तआला अपनी क़दीम सुन्नत को तर्क कर देवे। इस लिए तुम मेरी इस बात से जो मैं ने तुम्हारे पास बयान की ग़मगीं मत हो' अर्थात अपनी वफ़ात की ख़बर जो दी ।'' और तुम्हारे दिल परेशान न हो जाएं क्योंकि तुम्हारे लिए दूसरी क़ुदरत का भी देखना ज़रूरी है और उसका आना तुम्हारे लिए बेहतर है क्योंकि वह दाइमी है जिसका सिलसिला क़ियामत तक मुनक़ते नहीं होगा। और वह दूसरी क़ुदरत नहीं आ सकती जब तक मैं न जाऊं लेकिन मैं जब जाऊँगा तो फिर ख़ुदा उस दूसरी क़ुदरत को तुम्हारे लिए भेज देगा जो हमेशा तुम्हारे साथ रहेगी जैसा कि ख़ुदा का बराहीन अहमदिया मैं वादा है।''

(रिसाला अल् वसीयत, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 20 पृष्ठ 305)

अतः आपके ये शब्द कि ख़ुदा तआला का यह वादा है और वह दूसरी क़ुदरत अर्थात ख़िलाफ़त तुम में क़ियामत तक क़ायम रहेगी। ऐसे लोग हमेशा पैदा होते रहेंगे जो ख़िलाफ़त-ए-अहमदिया की हिफ़ाज़त करने वाले होंगे। अतः ख़ुश-क़िस्मत हैं हम में से वे लोग जो ख़िलाफ़त अहमदिया के साथ हमेशा जुड़े रहें और अपनी नसलों को भी इस की तलक़ीन करते रहें और बदक़िस्मत हैं वे जो ख़िलाफ़त अहमदिया को किसी दूर तक महिदूद करना चाहते हैं या यह सोच रखते हैं। ऐसे लोग हमेशा की तरह नाकामी और नामुरादी देखेंगे।

जैसा कि जमाअत की तारीख़ हमें बताती है। जो मुख़ालेफ़ीन थे उन्होंने ख़िलाफ़त-ए-औला या ख़िलाफ़त-ए-सानिया के इंतेख़ाब के वक़्त नाकामियाँ देखीं।

बहरहाल हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ख़िलाफ़त के क़ायम रहने के बारे में वज़ाहत करते हुए मज़ीद फ़रमाते हैं कि "वह वादा (यानी ख़िलाफ़त के क़ायम रहने का वादा) मेरी ज़ात की निसबत नहीं है बल्कि तुम्हारी निसबत वादा है जैसा कि ख़ुदा फ़रमाता है कि मैं इस जमाअत को जो तेरे अनुयाई हैं क़ियामत तक दूसरों पर ग़लबा दूँगा। अतः ज़रूर है कि तुम पर मेरी जुदाई का दिन आए ता बाद उसके वे दिन आए जो दाइमी वादा का दिन है वे हमारा ख़ुदा वादों का सच्चा और वफ़ादार और सादिक़ ख़ुदा है वे सब कुछ तुम्हें दिखाएगा जिसका उसने वादा फ़रमाया। जबकि यह दिन दुनिया के आख़िरी दिन हैं और बहुत बलाऐं हैं जिनके नुज़ूल का वक़्त है पर ज़रूर है कि यह दुनिया क़ायम रहे जब तक वे तमाम बातें पूरी न हो जाएं जिनकी ख़ुदा ने ख़बर दी।" अभी तो अल्लाह तआला के आपसे बेशुमार वादे हैं जो पूरे होने वाले हैं। फ़रमाया : "मैं ख़ुदा की तरफ़ से एक क़ुदरत के रंग में ज़ाहिर हुआ और मैं ख़ुदा की एक मुजस्सम क़ुदरत हूँ और मेरे बाद कुछ और वजूद होंगे जो दूसरी क़ुदरत का मज़हर होंगे।"

(रिसाला अल् वसीयत,रुहानी ख़ज़ायन, भाग 20 पृष्ठ 306-305)

अतः अल्लाह तआला ने इस्लाम की निशात सानिया और तरक़्क़ी के बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से जो वादे किए हुए हैं, जिन बातों के पूरा होने का अल्लाह तआला ने आप को बताया हुआ है वे इन शा अल्लाह ज़रूर पूरे होंगे, वे वादे ज़रूर पूरे होंगे। इस्लाम के ग़लबा के दिन जमाअत इन शा अल्लाह देखेगी। जमाअत की तरक़्क़ी के दिन जमाअत देखेगी। इन शाअल्लाह। जो लोग ख़िलाफ़त से जुड़े रहेंगे वे अल्लाह तआला के फ़ज़्लों के वारिस बनते चले जाऐंगे।

जमात अहमदिया ने दुनिया में फैलना है और यही हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया है। इसलिए आप अपनी जमाअत के ग़लबा के बारे में फ़रमाते हैं : "यह ख़ुदा तआला की सुन्नत है और जब से कि उसने इन्सान को ज़मीन में पैदा किया हमेशा इस सुन्नत को वे ज़ाहिर करता रहा है कि वे अपने नबियों और रसूलों की मदद करता है और उनको ग़लबा देता है जैसा कि वह फ़रमाता है كَتَبَ اللّٰهُ لَاَغْلِبَنَّ اَنَا وَرُسُلِيْ (अल् मुजादला : 22) और ग़लबा से मुराद यह है कि जैसा कि रसूलों और नबियों का यह मंशा होता है कि ख़ुदा की हुज्जत ज़मीन पर पूरी हो जाए और इस का मुक़ाबला कोई न कर सके इसी तरह ख़ुदा तआला क़वी निशानों के साथ उनकी सच्चाई ज़ाहिर कर देता है और जिस रास्तबाज़ी को वे दुनिया में फैलाना चाहते हैं इस की तुख़्म-रेज़ी उन्हीं के हाथ से कर देता है लेकिन इस की पूरी तकमील उनके हाथ से नहीं करता बल्कि एक दूसरा हाथ अपनी क़ुदरत का दिखाता है और ऐसे अस्बाब पैदा कर देता है जिनके ज़रीया से वे मक़ासिद जो किसी क़दर नातमाम रह गए थे अपने कमाल को पहुंचते हैं।" (रिसाला अल् वसीयत, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 20 पृष्ठ 304)

अतः हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जो ये भविष्यवाणियाँ फ़रमाई हैं, अल्लाह तआला के जिन वादों का वर्णन फ़रमाया है उन्होंने अपने कमाल तक पहुंचना है और ये आप अलैहिस्सलाम के बाद जो जारी निज़ाम-ए-ख़िलाफ़त है उस के माध्यम से ही पहुंचना है।

अल्लाह तआला ने जमाअत को तरक़्क़ी देनी है और दे रहा है। ख़ुद लोगों की राहनुमाई फ़रमाता है। ख़िलाफ़त के साथ उनको जोड़ता है और जोड़ रहा है अन्यथा ये इन्सानी बस की बात नहीं है। अफ़राद-ए-जमाअत और ख़लीफ़-ए-वक़्त को एक ऐसे मज़बूत बंधन में बांधना जिसकी मिसाल संभव न हो, ये इन्सान के बस की बात नहीं और न सिर्फ यह कि अल्लाह तआला उन लोगों के दिल ख़िलाफ़त के साथ जोड़ता है जो पहले अहमदी हैं बल्कि उनके भी दिल ख़िलाफ़त के साथ जोड़ता है कि जो ख़ुद बाद में शामिल हो रहे हैं और बिल्कुल नए आने वाले हैं जिनकी पूरी तरह तर्बीयत भी नहीं है। ये सिर्फ़ ख़ुदा तआला का ही काम है। वही इख़लास-ओ-वफ़ा बैअत के बाद लोग हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से दिखाते हैं। वही इख़लास और वफ़ा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मिशन को पूरा करने के लिए और आप अलैहिस्सलाम के नाम पर ख़िलाफ़त-ए-अहमदिया से दिखाते हैं और दिखा रहे हैं।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हो की बैअत जिस तरह लोगों ने की वे अल्लाह तआला की ख़ालिस ताईद-ओ-नुसरत नहीं थी तो और क्या था।

सिवाए चंद मुनाफ़िक़ तबा लोगों के जो हर जमाअत में होते हैं ख़िलाफ़त के फ़िदाई और शैदाई बढ़ते चले गए और जो मुनाफ़िक़ थे उनकी आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने अच्छी तरह सरज़निश की और उनको उनके मुक़ाम पर रखा। उनको सिर उठाने की हिम्मत नहीं हुई। फिर ख़िलाफ़त-ए-सानिया के इंतेख़ाब के वक़्त उन्ही मुख़ालिफ़ों के शोर मचाने के बावजूद जो ख़िलाफ़त-ए-ऊला में मुनाफ़क़त करते हुए जमाअत में रह रहे थे। उन्होंने मुख़ालेफ़त की। लेकिन जमाअत ने बावजूद उन लोगों के वरग़लाने के, शोर मचाने के, फ़ित्ना और फ़साद पैदा करने के हज़रत मियां साहब रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत मिर्ज़ा महमूद अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो कह कर हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हो की बैअत कर ली और फिर दुनिया ने देखा कि किस तरह तेज़ी से जमाअत तरक़्क़ी करती चली गई। दुनिया में मिशन हाऊस खुले, मसाजिद बनीं, लिटरेचर की इशाअत हुई। वे काम जिनके करने के लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम आए थे आगे बढ़ते रहे।

फिर ख़िलाफ़त-ए-साल्सा में अल्लाह तआला ने बावजूद हुकूमत-ए-वक़्त के बहुत सख़्त हमले के जमाअत को प्रगति से नवाज़ा। कशकोल (भीख मांगें वाला कटोरा) जमाअत के हाथ में पकड़ाने वाले ख़ुद बुरी हालत में दुनिया से विदा हुए।

फिर ख़िलाफ़त-ए-राबिया में प्रगति का एक और मार्ग खुला। अल्लाह तआला की सहायता और नुसरत के नए नज़्ज़ारे हम ने देखे। इशाअत-ए-इस्लाम के नए नए रस्ते खुले। ख़लीफ़-ए-वक़्त के हाथ काटने का सोचने वालों के अपने हाथ कट गए और फ़िज़ा में उनके जिस्म बिखर गए लेकिन जमाअत की तरक़्क़ी के क़दम नहीं रुके। तब्लीग़ के मैदान में वुसअत पैदा हुई। ऐम. टी. ए का आग़ाज़ हुआ जिससे हर घर में जमाअत का पैग़ाम पहुंचना शुरू हुआ। यह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से अल्लाह तआला के वादों का तकमील की तरफ़ बढ़ना है और यही चीज़ है अगर कोई समझे तो। अगर यह अल्लाह तआला के वादों का पूरा होना नहीं तो और किया था।

फिर ख़िलाफ़त-ए-ख़ामसा में भी अल्लाह तआला ने अपनी सहायता और नुसरत

के नज़्ज़ारे दिखाए। एम. टी. ए में ही इस्लाम का पैग़ाम पहुंचाने और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मिशन को पूरा करने के लिए नए नए रास्ते खुलने का इंतिज़ाम हुआ। एक के बजाय ऐ. टी. ए के सात आठ चैनल मुख़्तलिफ़ ज़बानों में जारी हुए। दुनिया की मुख़्तलिफ़ ज़बानों में मुख़्तलिफ़ प्रोग्रामों के तर्जुमे होने शुरू हो गए। दुनिया के हर कोने तक जहां पहले एम .टी ए नहीं जा रहा था वहां भी एम .टी ए पहुंच गया और वहां की अपनी ज़बान में इन लोगों, इन मुल्कों और उन इलाक़ों के रहने वालों को अहमदियत और हक़ीक़ी इस्लाम का पैग़ाम पहुंचने लग गया जिससे लाखों सईद रूहों को अहमदियत क़बूल करने की तौफ़ीक़ मिली।

फिर अल्लाह तआला ने एम टी ए और रेडीयो प्रोग्रामों के इलावा ख़ुद भी लोगों की राहनुमाई फ़रमाई और लोगों को ख़ाबों के ज़रीया और मुख़्तलिफ़ लिटरेचर के ज़रीया अहमदियत के पैग़ाम को क़बूल करने की तौफ़ीक़ दी। हम जब अहमदियत की तारीख़ देखते हैं तो पता चलता है कि किस तरह अल्लाह तआला कुछ लोगों की ख़ुद हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को मानने की तरफ़ आपके ज़माने में भी राहनुमाई फ़रमाता था। फिर यही सिलसिला हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हो के ज़माने में भी जारी रहा। अल्लाह तआला ख़ुद राहनुमाई फ़रमाता रहा। फिर और सईद रूहें जो थीं वे जमाअत में शामिल होती रहीं। फिर ख़िलाफ़त-ए-सानिया में भी बहुत से ऐसे वाक़ियात हैं। पुराने ख़ानदानों में, उनके घरों में यह रवायात चल रही हैं कि किस तरह अल्लाह तआला ने उनके बड़ों को हक़ क़बूल करने की तौफ़ीक़ दी। फिर ख़िलाफ़त-ए-साल्सा में भी यह सिलसिला नज़र आता है। ख़िलाफ़त-ए-राबिया में भी सईद रूहों को अल्लाह तआला की तरफ़ से अहमदियत के क़बूल करने की तरफ़ राहनुमाई हुई। यह सब अल्लाह तआला के हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से वादों का नतीजा था। इस तरह हर ख़िलाफ़त के दौर में जमाअत बढ़ती रही। ख़िलाफ़त ख़ामसा में भी अल्लाह तआला के यही सुलूक हैं। अल्लाह तआला तब्लीग़ के नए-नए रास्ते भी खौलता जा रहा है और लोगों के दिलों को भी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के पैग़ाम को जो इस्लाम का हक़ीक़ी पैग़ाम है सुनने और क़बूल करने की तरफ़ माइल करता चला जा रहा है। ऐसे ऐसे वाक़ियात होते हैं जो ख़ालिस ताईद-ए-इलाही का पता दे रहे होते हैं अन्यथा सिर्फ इन्सानी कोशिशों से कभी इस तरह लोग क़बूल न करें। मैं चंद वाक़ियात वर्णन कर देता हूँ कि किस तरह अल्लाह तआला ने लोगों के दिलों को इस्लाम और अहमदियत की तरफ़ फेरने के सामान फ़रमाए और ख़िलाफ़त अहमदिया की भी सच्चाई जो है उन पर खोली और किस तरह लोगों के दिलों में ख़िलाफ़त से मुहब्बत पैदा की।

गिनी बसाऊ अफ़्रीक़ा का एक दूर दराज़ का मुलक है वहां अब्दुल्लाह साहिब पहले एक ईसाई दोस्त थे। वह बयान करते हैं कि कुछ अरसा पहले उन्होंने ख़ाब देखी कि एक शख़्स है जिसकी सफ़ैद दाढ़ी है और उसने पगड़ी पहनी हुई है और लोगों से ख़िताब कर रहा है और मुकम्मल ख़ामोशी के साथ लोग यह ख़िताब सुन रहे हैं। कहते हैं इस शख़्स का ख़िताब करने का अंदाज़ बिल्कुल सादा और हमारे लोगों से मुख़्तलिफ़ था। जब उनकी आँख खुली तो उनको कुछ समझ नहीं आई फिर वे भूल गए। कुछ दिनों के बाद फिर उनको दुबारा इसी तरह से मिलती जुलती ख़ाब आई और इस से उनके ज़हन में वे चेहरा बैठ गया। फिर तीसरी मर्तबा उनको ख़ाब आई और वे कोशिश करते रहे कि पता चले कि यह कौन शख़्स है लेकिन पता नहीं कर सके। एक दिन इत्तिफ़ाक़ से गांव के क़रीबी फरीन (farin) में स्थित हमारी मस्जिद में गए। इस दिन जुमा था। लोगों जमाअत एम.टी. ए पर मेरा ख़ुतबा जुमा सुन रहे थे। वे कहते हैं मुझे देखकर उन्होंने फ़ौरन मुअल्लिम साहिब से पूछा कि यह कौन शख़्स है जो ख़ुतबा दे रहा है? उन्होंने कहा यह हमारे ख़लीफ़ा हैं। बहरहाल वह इस पर ख़ामोशी से बैठे ख़ुतबा सुनते रहे और ख़ुतबा जुमा के बाद लोगों के साथ नमाज़ अदा की। नमाज़ ख़त्म होने के फ़ौरन बाद खड़े हो गए और सब लोगों के सामने कहने लगे कि मैं आज इस्लाम क़बूल करता हूँ और बताने लगे कि मुझे ख़ुदा तआला ने तीन बार स्वप्न में यह शख़्स दिखया हैं जिस का मेरी रूह पर बड़ा असर था और मैं एक अरसा से इस तलाश में था परन्तु आज इत्तिफ़ाक़ से आपकी मस्जिद में आया हूँ तो आपके ख़लीफ़ा को देखा है। वही चेहरा है जो मैं ने ख़ाब में देखा था और इसी तरह नज़ारा था जो मैं ने ख़ाब में देखा था कि लोग ख़ामोशी से बैठे ख़िताब सुन रहे हैं और मैं इस्लाम अहमदियत में दाख़िल होता हूँ।

एक दूर दराज़ इलाक़े के शख़्स की इस तरह राहनुमाई कि पहले ख़ाब में देखते हैं। फिर अल्लाह तआला ऐसे सामान भी कर देता है कि इसी तरह का नज़ारा भी नज़र आ जाए।

कुछ लोग कहते हैं कि हमारे साथ ऐसा क्यों नहीं होता? तो यह तो अल्लाह तआला का फ़ज़ल है जिसकी चाहे राहनुमाई फ़रमाए लेकिन इसके लिए नेक फ़ितरत होना भी ज़रूरी है और अल्लाह तआला की तरफ़ झुकना भी ज़रूरी है। यक़ीनन इन्सान की, उस शख़्स की कोई नेकी होगी जो अल्लाह तआला ने इस तरह उनकी राहनुमाई फ़रमाई।

फिर गेम्बया के अमीर साहिब ने लिखा कि वहां एक महिला सिस्टर फ़ाटो साहिबा हैं। साठ साल के क़रीब उनकी आयु है। वह कहती हैं हमारे इलाक़े में एक इस्लामी ग्रुप के अफ़राद आए और जमाअत के ख़िलाफ़ बातें करने लगे कि अहमदी काफ़िर हैं। वे कभी जन्नत में दाख़िल नहीं हो सकते। उनसे किसी किस्म का लेन-देन नहीं रखना चाहिए। गांव के अक्सर लोगों ने उनकी बातों को मान लिया लेकिन यह महिला कहती हैं कि वह परेशान हो गईं और उन्होंने अल्लाह तआला से राहनुमाई के लिए दुआ करनी शुरू कर दी। कुछ दिन के बाद उन्हें ख़ाब आई कि इसी इस्लामी ग्रुप के अफ़राद जिन्हों ने इस गांव का दौरा किया था उनकी आँखें जबकि तारों की तरह चमक रही हैं और उन्होंने हाथ में क़ुरआन-ए-मजीद भी पकड़ा हुआ है लेकिन वह यह शिकायत कर रहे हैं कि क़ुरान-ए-मजीद की तहरीर को देख नहीं सकते। इस पर वे शोर मचाने लग गए कि अल्लाह तआला ने उन्हें अंधा कर दिया है और इस तरह वे अपनी रोज़ी भी नहीं कमा सकते और ज़लील-ओ-ख़ार और तबाह हो गए। कहती हैं कि मैं ने ख़ाब में यह भी देखा कि इस ग्रुप के मैंबरान जमाअत-ए-अहमदिया के ख़लीफ़ा के साथ हाथ मिलाना चाहते हैं पर इस में वे कामयाब नहीं हो सके और वह यह एतराफ़ कर रहे हैं कि अहमदियत तो बेशक सच्च है परन्तु अगर हम मान लें तो फिर हमारे मुरीद हमसे फिर जाऐंगे। बहरहाल इन महिला ने अपने घर वालों को सुबह यह ख़ाब सुनाई। लोग कहते हैं कि अफ़्रीकनों में सोच समझ कम है लेकिन बहरहाल उन्होंने अपनी ताबीर भी यह की कि जिस तरह रोशन आँखें थीं उसके बावजूद क़ुरआन की तहरीर नहीं पहचान रहे इस का मतलब यही था कि वह हक़ से मुकम्मल तौर पर गुमराह हो चुके हैं। तो ऐसे अजीब वाक़ियात कुछ लोगों के क़बूले अहमदियत के होते हैं कि ज़ाहिर हो रहा होता है कि अल्लाह तआला की ख़ास ताईद उन लोगों को ये नज़्ज़ारे दिखा रही है।

गोइटे माला साउथ अमरीका के मुल्कों में से है। यहां जो हमारी मस्जिद है वहां से अढ़ाई सौ किलो मीटर दूर मैक्सीको के बॉर्डर पर एक जगह मार्कोस (san marcos) है, वहां की एक महिला वीरोनीका (veronica) साहिबा कहती हैं मैं ने दस साल पहले ख़ाब में देखा था कि एक शख़्स ख़ाब में आए हैं और उन्होंने कहा सच्चाई का रास्ता इस्लाम है।

क़ुरान-ए-मजीद पढ़ने को कहा लेकिन उन्होंने कहा कि मैं तो क़ुरआन पढ़ना नहीं जानती। परन्तु उस शख़्स ने कहा तुम पढ़ सकती हो। सुबह उठकर उन्होंने अपने ख़ावंद और बाप से इस ख़ाब का वर्णन किया तो उन्होंने कहा कि इस्लाम कोई सच्चाई का रास्ता नहीं है यह तो दहश्तगर्दी का मज़हब है। अब ये सारे ईसाई लोग हैं। लेकिन कहती हैं मेरे दिल को सुकून नहीं हुआ। मैं ने इंटरनैट पर इस्लाम के बारे में तहक़ीक़ शुरू कर दी और ख़ुद ही इंटरनैट से इस्लाम के बारे में सीख रही थी। एक दिन बाज़ार में जा रही थीं कि एक पर्दा-दार महिला उनको मिल गईं। बहरहाल उनका पर्दा देख के उनको तजस्सुस पैदा हुआ कि उस को जा के मिलें और उस से पूछा तुम्हारा यह लिबास कैसा है? उसने कहा मैं मुस्लमान हूँ। इसलिए मैं ने पर्दा किया हुआ है। इसलिए उनसे उनका राबिता हो गया और उसने इस्लाम के बारे में तफ़सील बताई। वह महिला अहमदी थीं। कहती हैं मैं ने तो उनकी ये बातें सुनके, इस्लाम की तालीम को सुनके बैअत कर ली लेकिन घर वाले राज़ी नहीं होते थे, कोई न कोई एतराज़ कर देते थे। उनका जवाब कहती हैं मैं नहीं दे सकती थी तो फिर उन्होंने उनको कहा कि आप हमारे घर आएं। रिश्तेदारों को इकट्ठा करूँगी। एतराज़ात का जवाब दें। इसलिए हमारी बेशुमार तब्लीग़ी नशिस्तें हुईं, तब्लीग़ भी करने लग गईं। सिर्फ बैअत नहीं की बल्कि पैग़ाम भी आगे पहुंचाने लग गईं। दोस्तों को इकट्ठा किया और फिर उन के लिए रीफ़रेशमंट का इंतिज़ाम भी किया। उनका एक बेटा है जो वकालत की तालीम हासिल कर रहा है, यूनीवर्सिटी के आख़िरी साल में है। उसने भी बैअत कर ली और उनको इतना जोश और शौक़ है कि इंटरनैट के ज़रीया उन्होंने नाज़रा क़ुरआन-ए-करीम ख़ुद सीखा। बहुत सारी सूरतें ज़बानी याद कीं और फिर आडीयो सुनके अपनी ज़बान में, अरबी तो नहीं लिख सकती थीं, रोमन में क़ुरआन-ए-करीम पूरे का पूरा लिखा। अमीर साहिब कहते हैं कि जब मैं दौरे पर गया हूँ तो उनकी नोट बुक देखी। सारा क़ुरआन-ए-करीम

उन्होंने हाथ से लिखा हुआ था और अब अरबी भी सीख रही हैं और उसे अरबी में लिख रही हैं। इस तरह अल्लाह तआला न सिर्फ सईद रूहों को जमाअत में ला रहा है बल्कि आपके बाद जो आपसे वादे थे उनको भी पूरा फ़र्मा रहा है।

इंडोनेशिया,एक और दूर दराज़ का इलाक़ा, वहां एक नौजवान को तब्लीग़ की गई तो उसने फ़ौरन बैअत कर ली। इस जमाअत के सदर जमाअत नूर साहिब कहते हैं कि मैं ने उस को वापस जाने से पहले कुछ किताबें दिन और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की तसावीर वाले ब्रोशर भी दिए। जब वह नौजवान घर पहुंचा तो उस के वालिद ने एक ब्रोशर देख के पूछा कि यह तस्वीर किस की है? उस लड़के ने जवाब दिया कि यह इमाम महदी की तस्वीर है। कल रात मैं ने एक ख़ाब देखी थी कि इमाम महदी तशरीफ़ ले आए हैं। इसलिए कुछ जमाअत-ए-अहमदिया का परिचय पहले था तो मैं ने फ़ौरन बैअत कर ली है। इस पर उस के वालिद कहने लगे फिर तो मैं भी अब बैअत करना चाहता हूँ। इस तरह अल्लाह तआला शामिल कर रहा है।

बुर्कीना फासो के मुअल्लिम ज़ीला करीम साहिब कहते हैं कि हमारे इलाक़े के एक रिहायशी हमीद साहिब हैं। बाक़ायदा रेडीयो सुनते थे। जमाअत से हमदर्दी भी रखते थे। चंदा भी कभी आ के दे देते थे बल्कि कुछ दफ़ा बाक़ायदगी से देने लग गए थे लेकिन बैअत करने को कहा जाता तो किसी न किसी तरह टाल देते। आम चंदा तो नहीं देते होंगे तहरीक ए जदीद, वक़्फ़ ए जदीद में दे देते होंगे या किसी और मद में, सदक़ात में, बहरहाल यह चंदा देते थे। जो माली क़ुर्बानी है वह दे दिया करते थे। घाना में भी मैं ने देखा है, जब मैं वहां था तो बहुत सारे लोग जो ज़मींदार थे आके अपनी ज़कात दे जाया करते थे कि अपने मौलवियों को दें तो वे खा जाऐंगे। जमाअत-ए-अहमदिया उस का सही इस्तिमाल करेगी। बहरहाल इस तरह लोग वहां देते हैं। एक दिन उन्होंने ख़ाब में देखा कि इजतिमा हो रहा है जिसमें लोग एक चार-दीवारी के अंदर हैं और कुछ चार-दीवारी से बाहर हैं। कहते हैं कि मैं ने देखा उस चार-दीवारी के अंदर तमाम अहमदी लोगों हैं। इस पर मैं कहता हूँ मैं भी उनके साथ हूँ। मुझे भी अंदर दाख़िल किया जाये। तो यह आवाज़ आती है कि इस चारदिवारी में वही दाख़िल हो सकते हैं जिन्हों ने बैअत की है और आपने चूँकि बैअत नहीं की इसलिए आप उसके अंदर नहीं जा सकते। इसलिए इस ख़ाब के बाद अगले दिन ही उन्होंने आ के बैअत कर ली। इन्सानी कोशिशें तो उन्हें जमाअत में शामिल नहीं कर सकें लेकिन नेक फ़ितरत थे, अल्लाह तआला ने उन्हें ज़ाए नहीं किया। अल्लाह तआला ज़ाए नहीं करना चाहता था इसलिए इस तरह उनकी राहनुमाई फ़रमाई। यह भी उन लोगों के एतराज़ का जवाब है जो यह कहते हैं कि हमें तो ख़ाब नहीं आती।

पहले पाक फ़ितरत बने, ज़हन को ख़ाली करें, दुआ करें तो फिर ही अल्लाह तआला राहनुमाई भी करता है।

माली के एक दोस्त मुहम्मद कोने साहिब हैं। उन्होंने जमाअत के रेडीयो को सुना और लोग जो जमाअत के ख़िलाफ़ बोलते हैं उनकी बातें भी सुनें। इस के बाद उन्होंने दुआ करनी शुरू कर दी कि अल्लाह तआला उन्हें सीधी राह दिखाए। इसके बाद कहते हैं कि मैं ने ख़ाब में एक शख़्स को देखा जो कह रहा था, बुज़ुर्ग थे जो यह कह रहे थे कि हर बंदा अहमदियत में आएगा ख़ाह अभी आए या बाद में। तो ये तो अब अल्लाह तआला की तक़दीर है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से अल्लाह तआला का वादा है और जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि ख़िलाफ़त-ए-अहमदिया की जारी नेअमत जो है इसके द्वारा से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मिशन की तकमील होगी। बहरहाल इस बात पर उन्होंने बैअत की।

फिर गिनी बसाऊ के मुब्लिग़ ने लिखा कि उस्मान साहिब हमारे नए अहमदी हैं। उन्हें इलम हुआ कि उनके रिश्तेदार कसरत से अहमदियत क़बूल कर रहे हैं तो कुछ मौलवियों को इकट्ठा कर के इस इलाक़े में लेकर आ गए ताकि जमाअत की मुख़ालिफ़त कर सकें। तो हमारे मुअल्लिम ने उन्हें कहा कि आप ज़रूर मुख़ालिफ़त करें आपको रोका नहीं जाता परन्तु हमारा पैग़ाम एक मर्तबा सुन लें, बात सुन लें। फिर जो मुख़ालिफ़त करनी है दलील के साथ करें। मौलवी साहिबान ने तो पैग़ाम सुनने के लिए आने से इन्कार किया परन्तु उसमान साहिब ने दावत क़बूल की और जमाअत का पैग़ाम सुनने आ गए। उन्हें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की आमद के मुताल्लिक़ बताया गया। जिस दिन वे आए जुमा का दिन था और वहां उस दिन एम.टी.ए पर मेरा ख़ुतबा आ रहा था तो हमने उन्हें कहा कि अगर आपके पास वक़्त है तो कुछ देर ख़ुतबा सुन लें तो उन्होंने कहा थोड़ा सा वक़्त है मैं थोड़ी देर के लिए ख़ुतबा सुन लेता हूँ लेकिन जब ख़ुतबा सुनना शुरू किया तो भूल गए कि कितना वक़्त लग गया है और मुकम्मल ख़ुतबा सुना। बाद में कहने लगे कि अहमदिया जमाअत काफ़िर नहीं हो सकती जैसा कि मैं ने सुना है क्योंकि आपके ख़लीफ़ा तो सहाबी हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सीरत पेश कर रहे हैं और कोई काफ़िर जमाअत यह काम नहीं कर सकती। इसके बाद जमाअत की मुख़ालिफ़त उन्होंने ख़त्म कर दी और कुछ अरसा बाद अपनी फ़ैमिली के साथ जमाअत में शामिल भी हो गए और न सिर्फ शामिल हुए बल्कि अब तब्लीग़ भी कर रहे हैं। अपने चंदे भी यह बाक़ायदगी से देते हैं। अब यह भी ख़ुतबात का असर हो रहा है जो अल्लाह तआला ख़लीफ़ा वक़्त के ख़ुतबात में डालता है।

कोंगो किंशासा के लोकल मिशनरी कहते हैं कि वहां एक इलाक़े में तब्लीग़ी मुहिम शुरू की। ग़ैर अज़ जमाअत ने मुनज़्ज़म तौर पर मुख़ालिफ़त का आग़ाज़ कर दिया। तीन माह के बाद एक दिन इन्ही मुख़ालेफ़ीन में से एक दोस्त उस्मान साहिब ने मिशन में राबिता किया और कहा कि अपनी सारी फ़ैमिली के साथ जमाअत में शामिल होना चाहता हूँ। जब उनसे वजह पूछी गई तो कहने लगे कि एक दिन मेरी बीवी सैटेलाइट चैनल देख रही थी तो आपका चैनल एम.टी.ए अलग गया क्योंकि उस को मालूम था कि मैं अहमदियत की मुख़ालिफ़त में आगे आगे था उसने मुझे भी बुला लिया और जब मैं जमाअत के बारे में कुछ ग़लत बोलने लगा तो मेरी बीवी ने कहा कि पहले पूरा प्रोग्राम सुनो फिर बोलना। उस वक़्त भी वहां एम.टी.ए पर मेरा ख़ुतबा नशर हो रहा था। कहते हैं कि ख़ुतबा सुनने के बाद मुझे यक़ीन हो गया जो आवाज़ आज मेरे कानों में पड़ी है यही इस्लाम की हक़ीक़ी तस्वीर है और ख़लीफ़ा को सुनने के बाद जमाअत की सच्चाई में मुझे कोई शक नहीं रह गया।

अब यह मेरी ज़ात का कोई कमाल नहीं है बल्कि अल्लाह तआला ने ख़िलाफ़त के ज़रीया से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मिशन की तकमील का जो वादा फ़रमाया है यह अल्लाह तआला के फ़ज़ल हैं और उनका इज़हार है।

गिनी बसाऊ के मुबल्लिग़ इंचार्ज कहते हैं कि एक गांव में तब्लीग़ की। अक्सर लोगों ने अहमदियत क़बूल कर ली। चार ख़ानदानों ने अहमदियत क़बूल करने से इन्कार कर दिया। जब हमारी टीम वहां एम.टी. ए इंस्टाल करने गई तो मुअल्लिम साहिब ने इन तमाम ख़ानदानों को भी जो इंकारी थे मस्जिद में बुलाया और कहा कि हमारा मुस्लिम चैनल है उसे देखें जहां आप तस्वीर भी देख लेंगे हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की भी और ख़लीफ़-ए-वक़्त की भी। तो बहरहाल कहते हैं जब इंसाटालेशन मुकम्मल हो गई। नमाज़ की अदायगी करने के बाद जब दुबारा टीवी आन किया गया तो उस वक़्त मेरा ख़ुतबा एम.टी. ए पे चल रहा था। जो ग़ैर अज़ जमाअत थे उन्होंने बड़े ग़ौर से ख़ुतबा सुना, मुझे देखते रहे और इंग्लिश ज़बान में क्योंकि आ रहा था तो मुअल्लिम ने कहा मैं आप के लिए अनुवाद कर देता हूँ तो कहने लगे कि मुझे समझ नहीं आ रही परन्तु मैं ख़ुदा की क़सम खा कर कह सकता हूँ कि यह शख़्स जो बोल रहा है यह झूठ नहीं बोल सकता और अगर यह जमाअत-ए-अहमदिया का ख़लीफ़ा है तो जमाअत कभी झूठी नहीं हो सकती और उन्होंने उसी वक़्त फिर अहमदियत क़बूल करने का ऐलान किया।

माली से वहां के मुअल्लिम लिखते हैं कि एक शख़्स हमारे मिशन आया और बताया कि मैं बाक़ायदगी के साथ आपका रेडीयो सुनता हूँ और बैअत करना चाहता हूँ। उन्हों ने बैअत फ़ार्म भर लिया। चूँकि ये पढ़े लिखे थे इसलिए कहने लगे कि अगर कोई लिटरेचर फ़्रैंच ज़बान में है तो मुझे दें ता कि में इस से भी इस्तिफ़ादा करूँ और अपने साथियों को भी दूं। मुअल्लिम साहब ने उन्हें वह किताब दी जो मुख़्तलिफ़ लैक्चर हैं। अमन के ऊपर मेरे ऐडरैस हैं। वर्ल्ड क्राउसज़ ऐंड पाथवे पीस (world crisis and the pathway to peace) इस का फ़्रैंच अनुवाद उनको दिया। उन्होंने वहीं किताब खोली। जब उन्होंने तस्वीर देखी तो रोने लग गए। फिर उन्होंने बताया कि पहले मैं गाबोन में था और ख़ुदा से हमेशा सीधे रस्ते की हिदायत मांगता था। उस वक़्त मैंने बेशुमार दफ़ा ख़लीफ़तुल मसीह को ख़ाब में देखा है और मुझे पता तो नहीं चलता था कि यह कौन शख़्स है। आज मुझे समझ आई है कि मेरी दुआ क़बूल हो गई है और अल्लाह तआला ने मेरी राहनुमाई फ़रमाई।

नसमा साहिबा हैं अरब औरत हैं। कहती हैं कि बैअत से दो साल क़बल मैं ने पहली दफ़ा हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की तस्वीर देखी तो सम्बोधित कर के अर्ज़ किया, अरब हैं नाँ, तो कहती हैं कि तस्वीर को मुख़ातब कर के कहा। इस से पहले वह ज़िक्र कर रही हैं कि आपने बच्चे का ज़िक्र किया था जिसने टेढ़ी-मेढ़ी लकीरें खींची हुई थीं और यह लिखा था कि हुज़ूर मुझे आपसे प्यार है। बहरहाल कहती हैं बच्चे झूठ नहीं बोलते और मेरे दिल पर उस का बड़ा असर था। उन्होंने भी बैअत कर ली। कहती हैं कि लेकिन मैं ने कुछ अरसा के बाद तस्वीर देखी तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से अर्ज़ किया कि आपके हालचाल तो बताते हैं कि आप नेक आदमी हैं और झूठ नहीं बोलते लेकिन इस के बावजूद मैं आपकी इस बात पर तसदीक़ नहीं कर सकती कि आप आसमानी मबऊस हैं। कहती हैं मैंने अध्यन किया और इस के दो साल बाद 2016 ई. के शुरू में बैअत कर ली। इसके बावजूद ख़िलाफ़त के बारे में दिल में शक था। मेरे नफ़्स का शैतान कहता था कि ख़िलाफ़त के दावेदार को मैं कैसे अपनी ज़िंदगी का कंट्रोल दे दूं। क्यों मैं ऐसे शख़्स को ख़त लिखूँ और अपने हालात बताऊं। ख़िलाफ़त का क्या फ़ायदा है? कहती हैं लेकिन यह शक हज़रत मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु की किताब "ख़िलाफ़त-ए-राशिदा" और आपकी किताब "निज़ाम-ए-ख़िलाफ़त और इताअत" के अध्यन से ज़ाइल हो गया। मुझे सारी बातों की वज़ाहत हो गई। फिर मैं ने ख़त लिखा और जो आपका जवाब आया इस से वे संदेह पुर्णतः ख़त्म हो गया और यक़ीन हो गया कि ख़िलाफ़त भी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के क़दमों पर चलने वाली है। फिर लिखती हैं कि जो मुहब्बत ख़ुदा तआला ख़ुद दिलों में डालता है वह ख़ूब मज़बूती से डालता है और हमें उसका कारण मालूम नहीं होता। फिर कहती हैं इसी लिए अक्सर अहमदियों को हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से मुहब्बत और आपके खलिफ़ा से उमूमन और आपसे विशेषता बच्चों की सी मुहब्बत है। बैअत से पूर्व हमें इस किस्म की मुहब्बत का कोई अंदाज़ा नहीं था।

नाईजीरिया से सर्किट मिशनरी कहते हैं कि एक मज्लिस सवाल-ओ-जवाब के दौरान लोगों की इस बात पर बेहस चली कि बच्चों को बाप के नाम की मुनासबत के साथ पुकारने की बजाय उनके फ़ैमिली के नाम जो उनके बाप दादा के चले आ रहे हैं उस के साथ पुकारा जाए। इस पर उन्हें बताया गया क़ुरआन-ए-करीम की तालीम है कि बच्चों को उनके अपने बापों के नाम के साथ पुकारो जिस पर कुछ विशेषता ग़ैर अहमदी और नौमुबाईन हज़रात अभी पूरी तरह संतुष्ट नहीं थे परन्तु दौ दिन के बाद कहते हैं जब आप सहाबा पर ख़ुतबा दे रहे थे तो हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हो के वाक़ियात वर्णन किए और यह बताया कि अरब ज़ैद को ज़ैद बिन मुहम्मद कहने लगे थे तो अल्लाह तआला का हुक्म आया कि उन्हें उनके बाप के नाम से याद किया जाए। यह ख़ुतबा सुनकर सारी जमाअत और वे लोगों भी बहुत ख़ुश हुए जो दो दिन पहले यह बेहस कर रहे थे कि अब ख़लीफ़-ए-वक़्त ने हमारी राहनुमाई कर दी है। कुछ लोगों को यह ख़्याल हुआ कि इन दो दिनों में मुबल्लिग़ ने शायद वहां ख़लीफ़-ए-वक़्त को ख़बर पहुंचाई हो तब उन्होंने ज़िक्र कर दिया है लेकिन उसने कहा मैं ने तो कुछ नहीं बताया। तो फिर यह कहते हैं कि हमें बड़ी ख़ुशी हुई कि हमारे अल्लाह तआला ने ख़ुद ही हमारे सवाल का जवाब दिलवा दिया और इस ख़ुशी में जमाअत के एक व्यक्ति ने, अमीर आदमी ने एक और बड़ा टीवी एम.टी.ए देखने के लिए ख़रीदा कि मस्जिद के इस हिस्सा में लगवाया जाए जहां लजना हैं और औरतें बैठी हैं ताकि वे भी ख़िलाफ़त की बरकात से महरूम न हों। कहने लगे ख़िलाफ़त तो दिलों में बोलती है।

अब इन दूर दराज़ इलाक़ों में मुख़्तलिफ़ देशों में रहने वाले जो अहमदी हैं मुख़्तलिफ़ क़ौमों के हैं, नसलों के हैं उनमें ख़िलाफ़त से यह ताल्लुक़ कौन पैदा कर रहा है! निसंदेह यह अल्लाह तआला की ताईद-ओ-नुसरत है अन्यथा इन्सानी सोच इसका सामर्थ्य नहीं कर सकती।

फिर नार्वे से एक महिला बरीफ़ान साहिबा हैं। कहती हैं कि हर सच्चा अहमदी कहता है कि हमारे प्यारे हुज़ूर हमारे दिलों और आँखों में बस्ते हैं और हम उनके लिए दुआ करते हैं। इस दुनिया में हमारा कोई हम-ओ-ग़म नहीं सिवाए उसके कि आपको ख़ुश करने और आपका बोझ बांटने के तरीक़े सोचें।

आपने ख़ुतबात में वर्णन फ़रमाया कि कैसे सहाबा कराम रज़ियल्लाहु अन्हो ने अपने जिस्मों पर तीर लेकर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हिफ़ाज़त की और हमलों के सामने डटे रहे। इस नज़्ज़ारे को सोच कर मेरी आँखों में आँसू आ जाते हैं और सोचती हूँ कि अगर में ऐसे अवसर पर होती तो क्या करती। यह अरब औरत हैं। क्या डटी रहती? फिर दुआ करती हूँ कि अल्लाह तआला हमें तौफ़ीक़ दे कि इन सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो की तरह ख़लीफ़-ए-वक़्त और ख़िलाफ़त की अपने दिल-ओ-जान और माल और औलाद को क़ुर्बान कर के भी हिफ़ाज़त करें। कई साल से मैं नमाज़ में दुआ करती हूँ कि जितने आपके हम-ओ-ग़म और जितनी ज़िम्मेदारियाँ हैं अल्लाह तआला आप पर इन सबकी तादाद के बराबर फ़रिश्ते नाज़िल फ़रमाए जो आपको अपने घेरे में रखें।

अतः यह है वह इख़लास-ओ-वफ़ा का ताल्लुक़ जो अल्लाह तआला लोगों के दिलों में पैदा कर रहा है और इन शा अल्लाह तआला क़ियामत तक अल्लाह तआला यह वफ़ा और इखलास में बढ़ने वाले हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जमाअत को अता फ़रमाता रहेगा। ख़िलाफ़त अहमदिया को अता फ़रमाता रहेगा। दुनियादार इसको नहीं समझ सकते।

जर्मनी में एक अरब ने बैअत की तो उसके जानकार ने उसे कहा कि क्या तुम का क़ादियानी हो गए हो? तो उस नौ मुबाइन ने जवाब दिया , यह अरब था, कि तुम लोग यहां सौ अरब हो। तुम लोग किसी बात पर इकट्ठे नहीं हो सकते हो। जमाअत-ए-अहमदिया में एक इमाम है और उसके कहने पर जमाअत उठती है और बैठती है और इसी लिए उस के कामों में बरकत है। तो अब बताओ तुम्हारे में क्या ख़ूबी है जो मैं तुम्हारे साथ मिल जाऊं और उनको छोड़ दूं?

अतः जब तक ख़िलाफ़त से हर अहमदी चिमटा रहेगा अल्लाह तआला के फ़ज़्लों का वारिस बनता रहेगा। इस के लिए हमें अपने अम्लों को भी ख़ुदा तआला की तालीम के अनुसार ढालना होगा तभी यह नेअमत फ़ायदा देगी। यही अल्लाह तआला का वादा है कि जो लोग ईमान लाने के साथ अपने अमल अल्लाह तआला के बताए हुए तरीक़ के मुताबिक़ रखेंगे वे ख़िलाफ़त की बरकात से फ़ैज़ पाते रहेंगे।

अर्थात हम अल्लाह तआला पर कामिल ईमान लाते हुए उसकी इबादत का हक़ बजा लाने वाले भी हूँ और हमारा हर अमल अल्लाह तआला की रज़ा की तलाश करने वाला हो तभी हम यह फ़ैज़ पाएँगे। हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं: "क़ुरआन शरीफ़ में अल्लाह तआला ने ईमान के साथ अमल-ए-सालेह भी रखा है। अमल सालेह इसे कहते हैं जिसमें एक ज़रा भर फ़साद न हो।" आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं "अगर एक आदमी भी घर में अमल-ए-सालेह वाला हो तो सब घर बचा रहता है। समझ लो कि जब तक तुम में अमल सालेह न हो। केवल मानना फ़ायदा नहीं करता।"

(मल्-फ़ूज़ात, भाग 4, पृष्ठ 274-275)

अतः हमें अपने जायज़े लेते रहना चाहिए कि किसी वक़्त भी शैतान हम पर

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 103 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

Tahir Ahmad Zaheer
M.Sc. (Chemistry) B.Ed.
DIRECTOR
طالب دعا
Tahir Ahmad Zaheer
Director oxford N.T.T.College
Jaipur (Rajasthan)
TEACHER TRAINING

OXFORD N.T.T. COLLEGE
(Teacher Training)
(A unit of Oxford Group of Education)
Affialated by A.I.I.C.C.E. New Delhi 110001
0141-2615111- 7357615111
oxfordnttcollege@gmail.com
Add. Fateh Tiba Adarsh Nagar, Jaipur-04
Reg. No. AllCCE-0289/Raj.

हमला न करे। अल्लाह तआला ने हमारे बाप दादा को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मानने की तौफ़ीक़ दी या हमें आपको मानने की तौफ़ीक़ दी यह उसका एहसान है और इस एहसान के फ़ैज़ को जारी रखने के लिए हमें मुस्तक़िल अपने ईमान को बढ़ाने और ईमान पर नज़र रखने की ज़रूरत है ताकि हम में से हर एक उस फ़ैज़ से भी हिस्सा पाता रहे जिसकी भविष्यवाणी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाई थी और जिसका वादा अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से भी फ़रमाया अर्थात ख़िलाफ़त का निज़ाम।

अतः अपने जायज़े लेते रहने की ज़रूरत है कि किस क़दर हम ख़िलाफ़त से अपने आपको जोड़ने वाले हैं ताकि हम ख़ुदा तआला की वहदानियत को एक हो कर दुनिया में क़ायम करने वाले हों।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक जगह फ़रमाते हैं : "तुम्हें ख़ुशख़बरी हो कि क़ुरब पाने का मैदान ख़ाली है।" अर्थात अल्लाह तआला का क़ुरब पाने का मैदान ख़ाली है। इस की तरफ़ बढ़ने का मैदान ख़ाली है।" हर एक क़ौम दुनिया से प्यार कर रही है और वह बात जिससे ख़ुदा राज़ी हो उस की तरफ़ दुनिया को तवज्जा नहीं।" ख़ुदा की तरफ़ आने की तरफ़ दुनिया की तवज्जा नहीं।" वे लोग जो पूरे ज़ोर से इस दरवाज़ा में दाख़िल होना चाहते हैं" अर्थात अल्लाह तआला की तरफ़ बढ़ने वाले दरवाज़े की तरफ़ से दाख़िल होना चाहते हैं।" इन के लिए मौक़ा है कि अपने जोहर दिखलाएँ और ख़ुदा से ख़ास इनाम पाए यह मत ख़्याल करो कि ख़ुदा तुम्हें ज़ाए कर देगा तुम ख़ुदा के हाथ का एक बीज हो जो ज़मीन में बोया गया ख़ुदा फ़रमाता है कि यह बीज बढ़ेगा और फूलेगा और हर एक तरफ़ से इस की शाख़ें निकलेंगी और एक बड़ा दरख़्त हो जाएगा। (रिसाला अल् वसीयत, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 20 पृष्ठ 308 -309)

फिर आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि "ख़ुदा ने मुझे मुख़ातब कर के फ़रमाया कि मैं अपनी जमाअत को इत्तिला दूं कि जो लोग ईमान लाए ऐसा ईमान जो उस के साथ दुनिया की लालच नहीं और वह ईमान झूठ या बुज़दिली से मिला नहीं और वह ईमान इताअत के किसी दर्जा से महरूम नहीं ऐसे लोग ख़ुदा के पसंदीदा लोग हैं और ख़ुदा फ़रमाता है कि वही हैं जिनका क़दम सिदक़ का क़दम है।" (रिसाला अल् वसीयत, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 20 पृष्ठ 309)

ये सब बातें आप ने रिसाला अल् वसीयत में फ़रमाई हैं जिसमें ख़िलाफ़त के जारी होने की भी आपने ख़ुशख़बरी फ़रमाई थी। अतः आप का यह फ़रमान इस बात की तरफ़ तवज्जा दिलाता है कि हर अहमदी का ख़िलाफ़त से भी इख़लास-ओ-वफ़ा का ताल्लुक़ होना चाहिए और वही बैअत का हक़ अदा करने वाले होंगे जो इस मयार को हासिल करने वाले होंगे और जब यह होगा तभी हम आज यौम-ए-ख़िलाफ़त मनाने के हक़ को अदा करने वाले होंगे।

अल्लाह तआला सबको तौफ़ीक़ दे कि वे ख़िलाफ़त से बैअत के हक़ को भी अदा करने वाले हों और अल्लाह तआला के फ़ज़्लों को भी हासिल करने वाले हों।

आज यह थोड़ा सा मुख़्तलिफ़ ऐलान भी है कि आज घाना जमाअत अपना जलसा कर रही है दो-रोज़ा है। 27, 28 को और बुस्तान -ए-अहमद में जलसा है। इस के इलावा उन्होंने मुल्क भर में 119 सैंटर्ज़ बनाए हैं उनमें भी पाँच बड़े इजतेमाई सैंटर हैं और उनका राबिता आपस में आडीयो वीडीयो के ज़रीया से है। घाना जमाअत का आरंभ फ़रवरी 1921 ई. में हुआ था। मौलाना अबदुर्रहीम नय्यर साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु यहां लंदन से रवाना हो कर घाना पहुंचे थे पिछले साल घाना जमाअत अपनी सौ साला तक़रीबात मुनाक़िद करना चाहती थी लेकिन कोविड की वजह से कोई प्रोग्राम मुनाक़िद नहीं हो सका। इसलिए अब उन्होंने यह फ़ैसला किया है कि22 और 23 दो साल यह प्रोग्राम जारी रहीं। अल्लाह तआला उनका जलसा भी हर लिहाज़ से बाबरकत करे और उनको, सब अहमदियों को इख़लास-ओ-वफ़ा में बढ़ाता चला जाए।

इसी तरह गेम्बया का भी जलसा सालाना आज हो रहा है यह भी तीन दिन का जलसा है। अल्लाह तआला उसको भी हर लिहाज़ से बाबरकत फ़रमाए ।

★ ★ ★

पृष्ठ 03 का शेष

है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर ईमान लाने वालों का कर्तव्य था कि वे आपकी सहायता और नुसरत करें। यदि जिन्नात में ताक़त होती कि इन्सान की सहायता कर सकते या नुसरत कर सकते तो क्यों वे अबू जहल इत्यादि के सिर पर नहीं चढ़े। उनको कोई क़ुर्बानी भी नहीं करनी पड़ती थी। लोग कहते हैं कि जिन्न मिठाई लाकर देते हैं इत्यादि इत्यादि। पर में ऐसे जिन्नों का क़ायल नहीं हो सकता जो ज़ैद-ओ-बकर को तो मिठाई ला ला कर खिलाते हैं। लेकिन वे व्यक्ति जिस पर ईमान लाना आवश्यक और कर्तव्य था और कुछ जिन्न आप पर ईमान भी लाए थे। तीन तीन दिन तक फ़ाक़ा करता रहता है और उस को रोटी भी ला कर नहीं देते। यदि रसूलुल्लाह अललहसल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर ईमान लाना उन के लिए आवश्यक नहीं होता तो संदेह होता कि वे इन्सान को हानि पहुंचा सकते हैं या नहीं लेकिन अब विश्वास है कि वे ऐसा नहीं कर सकते। बाक़ी रहा यह कि महिलाओं के सिर पर जिन चढ़ते हैं यह सब बीमारियां हैं या वहम हैं या साईंस के परिणाम होते हैं। जैसे फास्फोरस रात को चमकती है ये अधिकतर क़ब्रिस्तानों में दिखलाई देती है क्योंकि हड्डीयों से फास्फोरस निकलती है और वे चमकती है और लोग उसको जिन्नों की तरफ़ मंसूब करते हैं।" (अख़बार अल्-फ़ज़्ल क़ादियान दारुल अमान नंबर 82 बहग 8 तिथि 2 मई 1921 ई. पृष्ठ 7)

इसी तरह फ़ज़ायलुल क़ुरआन के नाम पर प्रकाशित होने वाले अपने एक भाषण में हज़ूर रज़ियल्लाहु अन्हो जिन्नों के बारे में एक और पहलू पर रोशनी डालते हुए फ़रमाते हैं

"कुछ लोग कहते हैं कि जिन्न ग़ैर अज़ इन्सान वजूद हैं जो रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, हज़रत-ए-मूसा अलैहिस्सलाम और हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम पर ईमान लाए थे परन्तु देखना यह है कि क्या इन अर्थों को क़ुरआन-ए-करीम स्वीकार करता है। यदि यह एक उपमा है तो निसंदेह क़ुरआन-ए-करीम ने इस को अपनी किसी दूसरी आयत में हल किया होगा और उपमा तस्लीम न करने की सूरः में क़ुरआन-ए-करीम की दो आयतें बाहम टकरा जाएँगी और इस तरह क़ुरआन में मतभेद पैदा हो जाएगा। अतः हमें देखना चाहिए कि इस को इस्तिआरा तस्लीम न करने से क़ुरआन में मतभेद पैदा होता है या उपमा तस्लीम करके। जो लोग उपमा नहीं समझते वे कहते हैं कि ये ऐसा ही शब्द है जैसे शैतान का शब्द आता है। जिस तरह शैतान से मुराद एक ऐसी मख़लूक़ है जो इन्सानों से अलैहदा है इसी तरह जिन्न भी एक ऐसी मख़लूक़ है जो इन्सानों से अलग है हालाँकि وَإِذَا خَلَوْا إِلَىٰ شَيَاطِينِهِمْ

लेखकों ने सर्वसहमति से लिखा हैं कि इस जगह शयातीन से मुराद यहूदी और उनके बड़े बड़े सरदार हैं। अतः यदि इन्सान शैतान बन सकता है तो इन्सान जिन्न क्यों नहीं बन सकता?

इसी तरह अल्लाह तआला फ़रमाता है :

وَكَذَٰلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِيٍّ عَدُوًّا شَيَاطِينَ الْإِنسِ وَالْجِنِّ يُوحِي بَعْضُهُمْ إِلَىٰ بَعْضٍ زُخْرُفَ الْقَوْلِ غُرُورًا (अल् ईनाम : 113) अर्थात् हमने प्रत्येक नबी के दुश्मन बनाए हैं शैतान आदमियों में से भी और जिन्नों में से भी जो लोगों को मुख़ालेफ़त पर उकसाते और उन्हें नबी और उसकी जमाअत के ख़िलाफ़ तैयार करते रहते हैं। यहां अल्लाह तआला ने साफ़ तौर पर बता दिया है कि इन्सान भी शैतान होते हैं। अतः यदि शयातीन इन्सान हो सकते हैं तो जिन्न इन्सान क्यों नहीं हो सकते। अर्थात् जिस तरह इन्सानों में से शैतान कहलाने वाले पैदा हो सकते हैं इसी तरह उनमें से जिन्न कहलाने वाले भी पैदा हो सकते हैं। अतः क़ुरआन से ही पता लग गया कि केवल हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम के क़बज़ा में ही जिन्न नहीं थे बल्कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम और रसूले करीमसल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर भी जिन्न ईमान लाए थे।"

(फ़ज़ायल क़ुरआन नम्बर 6 पृष्ठ 387 से 388)

इसी तरह तफ़सीर कबीर में जनों के बारे में सैर हासिल बेहस फ़रमाने के बाद इस बेहस का सारांश तहरीर फ़रमाते हुए हज़ूररज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं

"बातों का सारांश यह कि क़ुरआन-ए-करीम में जिन्न कई अर्थों में इस्तिमाल हुआ है। (1) जिन्न वे समस्त मख़फ़ी मख़लूक़ जो ग़ैर मुरई शैतान की किसम से है यह मख़लूक़ इसी तरह बदी की तहरीक करती है जिस तरह मलायका नेक तहरीकात करते हैं। हाँ यह फ़र्क़ है कि मलायका की तहरीक व्यापक होती है और उन की तहरीक सीमित होती है। अर्थात् उनको ज़ोर इन्ही पर हासिल होता

है जो ख़ुद अपनी मर्ज़ी से बद ख़्यालात की तरफ़ झुक जाएं। उन्हें शयातीन भी कहते हैं। (2) जिन से मुराद क़ुरआन-ए-करीम में cave men भी है। अर्थात् इन्सान के काबिल इल्हाम होने से पहले जो बशर ज़मीन पर रहा करते थे और किसी निज़ाम के पाबंद न थे। हाँ आगे के लिए क़ुरआन-ए-करीम ने यह इस्तिलाह क़रार दे ली कि जो लोग इताअत का माद्दा रखते हैं उनका नाम इन्सान रखा और लोग नारी तबियत के हैं और इताअत से गुरेज़ करते हैं उन का नाम जिन्न रखा। (3) उत्तरी इलाक़ों के वे लोग अर्थात् यूरोप इत्यादि के जो एशिया के लोगों से मेल मिलाप नहीं रखते थे और जिन्न के लिए अंतिम ज़माना में हैरत-अंगेज़ दुनयावी तरक़्क़ी और मज़हब से बग़ावत निर्धारित थी। इन का वर्णन सुरः रहमान में क्या है। (4) ग़ैर मज़हब के लोगों को और अजनबियों को जिन्हें कुछ अक़्वाम जैसे हिंदू और यहूद कोई नई मख़लूक़ समझते थे, उनको आम मुहावरे के तौर पर जिन्न के नाम से मौसूम किया है, जैसे हज़रत सुलेमान के जिन्न या रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर ईमान लाने वाले लोग।

मेरे नज़दीक दोज़ख़ में जाने वाले जिन्न जिन्नात का वर्णन आता है उनसे मुराद या तो वही नारी स्वभाव वाले लोग हैं जो इताअत से बाहर रहते हैं और किसी मज़हब या शिक्षा को क़बूल नहीं करते। और इन्सान दोज़ख़ियों से मुराद वे कुफ़्फ़ार हैं जो किसी न किसी मज़हब से अपने आपको वाबस्ता करते हैं। या फिर अक़्वाम उत्तर पश्चिम को जिन्न क़रार दिया है। और दक्षिणी दुनिया और पूर्व के लोगों को उन्स क़रार दिया है, जैसा कि आम भाषा में ये लोग इन नामों से प्रसिद्ध थे।

यह निलंबन ख़त्म करने से पहले मैं यह भी बता देना चाहता हूँ कि कई पुराने बुज़ुर्ग कम से कम इस ख़्याल में मेरे साथ शरीक हैं कि वह जिन्न कोई नहीं होते जो इन्सानों से आकर मिलें और इस पर सवार हो जाएं और उन से विभिन्न काम लें ... यदि कहा जाए कि कुछ बुज़ुर्गों ने जिन्नात का वर्णन किया है तो इस का उत्तर यह है कि यह अध्यात्मिक नज़्ज़ारे हैं और उदाहरण की भाषा में ऐसी बातें नज़र आ जाती हैं। उन्होंने कशफ़ से कुछ उमूर देखे और चूँकि लोगों में जिन्नात का अक़ीदा था और क़ुरआन-ए-करीम में भी शब्द जिन्न का इस्तिमाल हुआ है उन्होंने इन उदाहरण दिए जाने वाले वजूदों को असली वजूद समझ लिया।

मेरा अपना ज़ाती अनुभव इस बारे में यह है कि कई विभिन्न वक़्तों में लोगों ने मुझे ऐसे पत्र लिखे हैं कि जिन्नात उनके घर में आते और उपद्रव करते हैं। मैंने हमेशा अपने ख़र्च पर इस मकान का अनुभव करना चाहा लेकिन हमेशा ही या तो यह उत्तर मिला कि अब उनकी आमद बंद हो गई है। या यह कि आपके पत्र आने या आप का आदमी आने की बरकत से वे भाग गए हैं। मेरा अपना ख़्याल है कि जो कुछ उन लोगों ने देखा एक बेचैन करने वाला करिश्मा था। मेरे पत्र या पैगंबर से चूँकि उन्हें तसल्ली हुई वह हालत बदल गई।

यदि इस तफ़सीर के पढ़ने वालों में से किसी साहब को इस मख़लूक़ का अनुभव हो और वह मुझे लिखें तो मैं अपने ख़र्च पर अब भी अनुभव कराने को तैयार हूँ अन्यथा जो कुछ मैं असंख्य क़ुरआन दलायल से समझा हूँ यही है कि लोगों में जो जिन्न प्रसिद्ध हैं और जिन्न की निसबत कहा जाता है कि वे इन्सानों से सम्बन्ध रखते और उन को चीज़ें लाकर देते हैं यह केवल ख़्याल और वहम है या मदारियों के तमाशे हैं जिनके अंदरूनी भेद के न जानने की वजह से लोगों ने उनको जिन्नात की तरफ़ मंसूब कर दिया है। इस ज्ञान का भी मैंने अध्यन किया है। और बहुत सी बातें उन हथकंडे करने वालों की जानता हूँ।"

(तफ़सीर-ए-कबीर भाग 4 पृष्ठ 69 से 70)

इसके अतिरिक्त हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल् राबे अपनी मज्लिस इर्फ़ान और मज्लिस प्रश्न उत्तर में जिन्नों के सम्बन्ध में होने वाले प्रश्नों के उत्तर में हमेशा यही विचार शैली वर्णन फ़रमाइ कि क़ुरआन और हदीस में ऐसे जिन्नों का कहीं वर्णन नहीं मिलता जो मौलवियों के दिमाग़ों के जिन्न हैं और जो उनके कहने पर रातों रात किसी व्यक्ति को उठा कर उनके सामने हाज़िर कर दें। इसलिए हज़ूर अपनी उच्च कोटि की लेखनी "इल्हाम, अक़ल, इल्म और सच्चाई" में फ़रमाते हैं :

"अब हम विज्ञान के झगड़े में मुख से सुने पुराने किस्से कहानीयों में वर्णित जिन्न की हकीक़त का जायज़ा लेते हैं ... जिन्न का शब्द किसी पोशीदा, ग़ैर मुरई, अलग-थलग और दूर की चीज़ पर दलालत करता है। इस में गहरे और घने साय का मफ़हूम भी पाया जाता है। इसी लिए क़ुरआन-ए-करीम ने जिन्नौ के शब्द को (जो इसी तत्व से निकला है) जन्नत के लिए इस्तिमाल किया है जो ऐसे घने बाग़ात पर आधारित है जिनके साय बहुत ही गहरे हैं। जिन्न के शब्द का इतलाक़ साँपों पर भी होता है जो स्वभाविक रूप में पोशीदा और छुप कर रहना पसंद करते हैं जिस के लिए वे अलग-थलग बिलों और चटानों में मौजूद सुराख़ों का इंतिख़ाब करते हैं। जिन्न का शब्द बा पर्दा महिलाओं के लिए भी इस्तिमाल होता है और ऐसे सरदारों और बड़े लोगों के लिए भी जो अवाम से दूर रहना पसंद करते हैं। इसी तरह दूरदराज़ और कठिन पहाड़ी इलाक़ों में बसने वाले लोगों पर भी जिन्न के शब्द का इतलाक़ होता है। संक्षिप्त आम इन्सानी निगाह से ओझल और पोशीदा प्रत्येक चीज़ पर जिन्न का शब्द इतलाक़ पाता है।

जिन्न के शब्द का मज़कूरा मफ़हूम आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की इस हदीस के अनुसार है जिस में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने लोगों को ख़ुशक गोबर और हड्डीयों से इस्तिंजा करने से इस लिए मना फ़रमाया है कि ये जिन्नों की ख़ुराक है। जिस तरह आजकल सफ़ाई के लिए टायलट पेपर इस्तिमाल किए जाते हैं इसी तरह पुराने ज़माना में लोग सफ़ाई के लिए मिट्टी के ख़ुशक ढेले, पत्थर या क़रीब पड़ी कोई और ख़ुशक चीज़ इस्तिमाल किया करते थे। अतः हम बाआसानी यह परिणाम निकाल सकते कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने इस हदीस में जिस जिन्न का वर्णन फ़रमाया है इस से मुराद कोई ग़ैर मुरई मख़लूक़ ही है जिसका गुज़ारा हड्डीयों और फुज़ला इत्यादि पर होता है। याद रहे कि उस वक़्त दुनिया में बैक्टीरिया और वायरस का कोई तसव्वुर मौजूद नहीं था और कोई व्यक्ति इस किस्म की ग़ैर मुरई और सुक्ष्म दिखने वाली मख़लूक़ का तसव्वुर भी नहीं कर सकता था। हैरत-अंगेज़ बात यह है कि जिस मख़लूक़ की तरफ़ आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने इशारा फ़रमाया है, अरबी भाषा में इसके लिए जिन्न से बेहतर और कोई शब्द नहीं है।"

(इल्हाम, अक़ल, इल्म और सच्चाई पृष्ठ 311 से 312)

इस प्रश्न पर कि जिन्नात के सम्बन्ध में इस्लाम का क्या तसव्वुर है, क़ुरआन में या हदीस में से इस का क्या सबूत मिलता या आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ज़िंदगी में कोई ऐसा घटना हुई है जिससे साबित हो के जिन्नात का भी वजूद है या जिस तरह आजकल के लोगों में तसव्वुरात हैं कि जिन्न चिमट जाते हैं क्या यह दरुस्त है? हज़ूर ने फ़रमाया :

"मैं तो जिन्नों पर बहुत बोल चुका हूँ। जिन्न तो ऐसी बला है कि पीछा ही नहीं छोड़ती। जिस मज्लिस में जाओ, जिस मुल्क में जाओ जिन्न अवश्य आ जाते हैं। अर्थात् जिन्न का प्रश्न आ जाता है। बहुत दफ़ा बता चुका हूँ, ख़ुद्दामुल अहमदिया के इज्तेमा में भी जिन्न आया करता था। अन्सारुल्लाह में भी उसने पीछा नहीं छोड़ा। अभी भी जहां कराची जाओ वहां प्रश्न हो जाता है। पिंडी जाओ वहां प्रश्न हो जाता है। इंग्लिस्तान में यूरोप में प्रत्येक जगह पाकिस्तानियों को जिन्न के साथ बड़ी दिलचस्पी है।

जिन्न का शब्द क़ुरआन-ए-करीम में विभिन्न जगहों पर विभिन्न रूपों में आया है। संक्षिप्त जिन्न से मुराद अरबी भाषा में मख़फ़ी चीज़ें हैं। अर्थात् अरबी में जिन्न शब्द उन चीज़ों पर इतलाक़ पाता है जो किसी पहलू से भी मख़फ़ी हों। और साँप को भी इसी लिए जिन्न या जान्नका कहा जाता है और महिलाओं को भी जिन्न कहा जाता है जो पर्दा-दार हों। बड़े लोग जो अवामुन्नास से अलग रहें, छुप के रहें उनको भी जिन्न कहा जाता है। पहाड़ी कौमें जो साधारणतः plain में बसने वाले लोगों से, आम ज़मीन पर बसने वाले लोगों से बे-तअल्लुक़ रहती हैं, मख़फ़ी रहती हैं उनको भी जिन्न कहा जाता है। ग़ारों के बसने वाले लोगों को भी जिन्न कहा जाता है। hardy जफ़ाकश उसके लिए भी जिन्न का शब्द इस्तिमाल होता है। bacteria के लिए भी जिन का शब्द इस्तिमाल होता है। इसलिए रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हड्डी से इस्तिंजा करने से मना फ़रमाया कि यह जिन्न की ख़ुराक है। इस ज़माना में तो bacteria का कोई तसव्वुर नहीं था न यह पता था कि किसी चीज़ की ख़ुराक है। परन्तु बाद के ज़मानों में तहक़ीक़ हुई तो पता चला कि वाक़ई हड्डी के साथ bacteria चिमटे होते हैं और वे हानिकारक हैं और इस से इस्तिंजा नहीं करना चाहिए। तो जिन्न का एक अर्थ तो है मख़फ़ी। इन अर्थों में जिन्न के सारे अर्थ हैं। एक और अर्थ है आग से पैदा हुआ-हुआ। जिसमें नारी विशेषता पाई जाती हों, जिस में बग़ावत की रूह पाई जाती हो। तो प्रत्येक वे क़ौम जो आतिशीं मिज़ाज रखती हो, जो volatile हो, ग़ुस्सा जल्दी आता हो और लड़ाका और फ़सादी, बग़ावत करने वाली इन सबको जिन कहा जाता है। हज़रत सुलेमान और हज़रत दाऊद के जो ग़ुलाम बनाए गए थे जिन्न वे ऐसी कौमें थीं जिन पर विजय हुई और उनमें जफ़ाकशी भी साथ थी और बग़ावत का माद्दा भी था।

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 07 Thursday 30 June 2022 Issue No.26

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com

इसलिए क़ुरआन-ए-करीम फ़रमाता है उनको ज़ंजीरों में जकड़ा गया था और से forced labour ली जाती थी। यदि वे इस किस्म के जिन्न हों जैसे मौलवियों के दिमाग़ में पैदा होते हैं वे ज़ंजीरों में तो नहीं जकड़े जा सकते। साफ़ पता चल गया कि वे जिन्न जो हैं वे कोई माद्दी मख़लूक़ है। इसलिए बड़े लोगों और capitalist system के लिए भी क़ुरआन-ए-करीम ने जिन्न का शब्द इस्तिमाल किया है। चोटी के लोग ख़ाह वे capitalist हूँ ख़ाह वे अवामी हुकूमतों के नुमाइंदे हों, उनको सूरः अलरहमान में अल्लाह तआला संबोधित करके फ़रमाता है يٰمَعۡشَرَ الۡجِنِّ وَ الۡاِنۡسِ اِنِ اسۡتَطَعۡتُمۡ اَنۡ تَنۡفُذُوۡا مِنۡ اَقۡطَارِ السَّمٰوٰتِ وَ الۡاَرۡضِ فَانۡفُذُوۡا ؕ لَا تَنۡفُذُوۡنَ اِلَّا بِسُلۡطٰنٍ (अल् रहमान : 34) मौअशेरुल जिन्न में से चोटी के लोगो वल् इन्स और हे लोगों में से चोटी के लोगो। यह मुराद है वहां पर। तो जिन्न का शब्द इन सारी जगहों के सम्बन्ध में इस्तिमाल होता है, बड़ा व्यापक है। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से भी पहाड़ी इलाक़े के कुछ लोग, जफ़ाकश क़ौमों के नुमाइंदे मिलने के लिए आए और अपने उनके साथ, वे चाहते थे कि अलैहदा बात चीत हो। इसलिए हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने बाहर उनसे वक़्त निर्धारित किया जहां डेरा डाला था, वहां उनसे मिलने गए और बात चीत हुई। क़ुरआन-ए-करीम ने इस का वर्णन किया है और सूरः जिन्न में इस का वर्णन आता है। और इसके बाद वे ईमान भी ले आए और साथ ही अहादीस से पता चलता है कि बाद में जब सहाबा वहां गए तो देखा कि वहां उनके चूल्हों के निशान थे जहां खाना पकाया जाता था। तो जिन्नों की ख़ुराक यदि वे जिन्न थे जो मौलवी समझते हैं तो वे तो आग पर खाना नहीं पकाया करते उनकी तो ख़ुराक ही और चीज़ें हैं वे तो अग्नि तत्व है या हवाई सा वजूद है। तो साफ़ पता चला कि जो जिन्न रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से मिलने आए थे वे इन्सानों में से थे। फिर अम्बिया का तसव्वुर वहां पाया जाता है वे कहते हैं हम लोग बड़े जाहिल होते थे। हम समझते थे कि ख़ुदा अब कभी किसी नबी को नहीं भेजेगा। लेकिन देख लो फिर नबी आ गया। तो अम्बिया तो इन्सानों के लिए आते हैं। क़ुरआन-ए-करीम रसूलुल्लाह करेमिसल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को हमेशा इन्सानों को से संबोधित करके संदेश पहुंचाने के लिए फ़रमाया है, जिन्नों को संबोधित करके कहीं नहीं फ़रमाया। तो इसलिए वे जो ईमान लाए वर्णन करते हैं कि हम नबियों का इंकार कर गए थे कि आगे अब कोई नबी नहीं आएगा, साफ़ पता चलता है कि वे इन्सानों में से कुछ लोग थे। तो क़ुरआन-ए-करीम ने इन अर्थों में, उनसे मिलते-जुलते अर्थों में जो मैंने वर्णन किए हैं कई जगह जिन्नों का वर्णन किया है। लेकिन ऐसे जिन्न का वर्णन नहीं किया जो मौलवी-साहब को लोगों के मुर्गे चुरा के ला के दे। या आपकी इच्छा हो कि अमुक आदमी को पकड़ के ले आए तो जिन्न रात-ओ-रात पकड़ के ले आए। ऐसा कोई वर्णन क़ुरआन-ए-करीम में नहीं मिलता रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ज़िंदगी में भी नहीं मिलता।

(मज्लिस सवाल जवाब तिथि 29 दिसंबर 1984 ई.)

शेष आगे .....

★ ★ ★

अख़बार बदर के अंकों की रक्षा करें

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने की यादगार अख़बार "अख़बार बदर" 1952 ई.से लगातार क़ादियान दारुल अमान से मुद्रित हो रहा है, और जमआत की दीनी ज़रूरतों को पूरा कर रहा है। इस में क़ुरआन-ए-करीम की आयात, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हदीसे, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मल्-फ़ूज़ात और लेखनी के इलावा सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के ताज़ा ख़ुतबात जुमा और खिताबात, अध्याम्त्पूर्ण संदेश, ख़ुतबा जुमा प्रश्न उत्तर के रूप में और हुज़ूर के दौराजात की निहायत ईमान अफ़रोज़ और दीनी और दुनियावी इलम के ख़ज़ानों से भरपूर रिपोर्टस प्रकाशित होती हैं। इनका अध्यन करना, उनको दूसरों तक पहुंचाना, इन पर अमल करना और उनके माध्यम से अपनी और अपने बच्चों की तालीम-और-तर्बीयत करना हम सब का फ़र्ज़ है। इन समस्त उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए अख़बार बदर के शुमारों को हिफ़ाज़त के साथ अपने पास सुरक्षित रखना हम सब की महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारी है।

दीनी तालीम-ओ-तर्बीयत पर आधारित यह मुक़द्दस अख़बार तक़ाज़ा करता है कि इस का सम्मान किया जाए। इस लिए उसको रद्दी में बेचना यह सम्मान का उल्लंघन करने के समान है। यदि इस को सँभालना सम्भव न हो तो सावधानी के साथ इस को नष्ट करें ताकि इन पवित्र लेखनियों का अपमान न हो। उम्मीद है कि जमआत इस तरफ़ विशेष ध्यान फ़रमाएँ गी और इस से भरपूर लाभ प्राप्त करते हुए इन विषयों को समक्ष रखेंगे। (संस्थान) ★ ★ ★

पृष्ठ01 का शेष

चलता। जो इन्सान कहता है कि मैं ख़ुद हिदायत का काम कर लूंगा वह ग़लती पर है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस मज़मून पर विशेष ज़ोर दिया है। आप फ़रमाते हैं कि इन्सानी कोशिश दुनयवी उमूर में मंज़िला दुआ के है और इस के नतीजा में इन्सान के ज़हन में जो तदबीर आती है वह भी वह्यी है। ग़रज़ मक्खी की मिसाल से यह बताया है कि कलाम-ए-इलाही के बग़ैर कामयाब ज़िंदगी असम्भव है। यहाँ तक कि जानवर भी वह्यी के मुहताज हैं और उन पर एक किस्म की वह्यी नाज़िल होती है जिसकी नुमायां मिसाल शहद की मक्खी में पाई जाती है। अतः जबकि मौजूदात के हर वर्ग के लिए ख़ुदा ने वह्यी नाज़िल की है हालाँकि उनकी ज़िंदगी सीमित और अक़ल मुख़्तसर है। तो इन्सान जिसकी ज़िंदगी का असर अगले जहान पर भी पड़ता है उस का निज़ाम बग़ैर वह्यी के किस तरह चल सकता है।

क़ुरआन-ए-करीम के विषय में असंख्य जगह वही के शब्द आए हैं जो शहद के बारे में इस आयत में आए हैं और उनसे यह बताया है कि कलाम अपने अंदर वही ख़ासीयत रखता है जो वह्यी के नतीजा में पैदा होती है अर्थात शिफ़ा की तासीर। इसलिए सूरत बनी इसराईल रुकु : 9 में फ़रमाता है :

وَنُنَزِّلُ مِنَ الۡقُرۡاٰنِ مَا هُوَ شِفَآءٌ وَّرَحۡمَةٌ لِّلۡمُؤۡمِنِيۡنَ ۙ سورۃ یونس رکوع 6 میں فرماتا ہے يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ قَدۡ جَآءَتۡكُمۡ مَّوۡعِظَةٌ مِّنۡ رَّبِّكُمۡ وَشِفَآءٌ لِّمَا فِى الصُّدُوۡرِ

फिर ह म सजदा रुकु 5 में फ़रमाता है : قُلۡ هُوَ لِلَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا هُدًى وَّشِفَآءٌ ۚ

(तफ़सीर-ए-कबीर, भाग 4, पृष्ठ 195 मुद्रित 2010 क़ादियान)

اب دیکھتے ہو کیسا رجوع جہاں ہوا اک مرجع خواص یہی قادیاں ہوا
HUSSAIN CONSTRUCTIONS & REAL ESTATE
﴿ہمارا عزم صاف ستھرا کاروبار﴾ (SINCE 1964)
क़ादियान में घर, फ्लैट्स और बिल्डिंग उचित कीमत पर निमार्ण करवाने के लिए सम्पर्क करें, इसी प्रकार क़ादियान में उचित कीमत पर बने बनाए नए और पुराने घर / फ्लैट्स और ज़मीन ख़रीदने और Renovation के लिए सम्पर्क करें
(PROP: TAHIR AHMAD ASIF)
contact no. : 87279-41071, 83603-14884, 75298-44681
e mail : hussainconstructionsqadian@gmail.com
HUSSAIN CONSTRUCTIONS & REAL ESTATE

CHANDIGARH DIAGNOSTIC LABORATORY
थाने वाला चौक, ठीकरीवाल रोड, नज़दीक केनरा बैंक, पंजाब एंड सिंध बैंक क़ादियान
सभी प्रकार के शारीरिक टैस्ट (खून, मल,बलग़म इत्यादि) कंप्यूटरराइज्ड तरीके से उपलब्ध हैं।
हमारे सहभागी :- SRL (SUPER RANBAXY LABORATORIES), THYROCARE MUMBAI.
चौधरी खिज़र बाजवा दरवेश क़ादियान, लुकमान अहमद बाजवा
और जानकारी के लिए संपर्क करें :- इमरान अहमद बाजवा, रिज़वान अहमद बाजवा
फ़ोन नंबर :-+91-9646561639,+91-8557901648

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad